अंक: 26
सितंबर-दिसंबर,
2020

टीएचडीसी

पहल

राजभाषा गृह–पत्रिका

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED

एनसीआर कार्यालय, कौशांबी का माननीय संसदीय राजभाषा समिति के द्वारा राजभाषा निरीक्षण

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के एनसीआर कार्यालय, कौशांबी का माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति के द्वारा 07 दिसंबर, 2020 को एनआरपीसी परिसर, नई दिल्ली में राजभाषा निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष, माननीय श्री भर्तृहरि महताब, संसद सदस्य (लोकसभा), दूसरी उपसमिति की संयोजक, प्रो. रीता बहुगुणा जोशी, माननीय श्री सुशील कुमार गुप्ता, संसद सदस्य (राज्य सभा), समिति के सचिव, श्री गोपी चंद्र छावनिया एवं अन्य पदाधिकारी निरीक्षण हेतु उपस्थित रहे।

विद्युत मंत्रालय की ओर से श्री राजपाल, आर्थिक सलाहकार एवं श्री अमित प्रकाश, संयुक्त निदेशक (राजभाषा) निरीक्षण में सहयोग करने के लिए उपस्थित हुए। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की ओर से निरीक्षण में सहयोग करने हेतु एनसीआर कार्यालय के कार्यपालक निदेशक, श्री यू.सी. कन्नौजिया, अपर महाप्रबंधक, श्री एस.एम. सिद्दिकी, उप प्रबंधक (कार्मिक/हिंदी), श्री डी.सी. भारती एवं वरि. हिंदी अधिकारी, श्री डी.एस. रावत उपस्थित थे।

कार्यपालक निदेशक, श्री यू.सी. कन्नौजिया ने स्वागत संबोधन प्रस्तुत कर माननीय समिति के सदस्यों एवं पदाधिकारियों का स्वागत किया गया। निरीक्षण से संबंधित दस्तावेजों पर समिति के सदस्यों ने विस्तृत चर्चा की तथा कार्यालय में राजभाषा के कार्यान्वयन पर हर्ष व्यक्त किया। इसके साथ ही उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन को ओर बेहतर करने के लिए अनेक सुझाव भी दिए।

निदेशक (कार्मिक) की कलम से

प्रिय साथियों,

सर्वप्रथम आपको एवं आपके परिवार को नववर्ष–2021 की हार्दिक शुभकामनाएं!

नववर्ष के आगमन पर हमारे जीवन में नई आशाओं एवं आकांक्षाओं का संचार होता है तथा हम नई स्फूर्ति एवं उत्साह के साथ नए वर्ष के लिए निश्चित किए गए अपने नए लक्ष्यों को पूरा करने में जुट जाते हैं। गत वर्ष में कोविड–19 महामारी के कारण पूरे विश्व को बहुत भयावह स्थिति का सामना करना पड़ा। परन्तु यह भी निर्विवाद रूप से सत्य है कि स्थितियां हमेशा एक जैसी नहीं रहती और मेरा विश्वास है कि समूचा विश्व धीरे– धीरे इस गंभीर आपदा से उबर कर नव निर्माण की तरफ अग्रसर होगा। मेरी कामना है कि वर्ष 2021 में हमारे भीतर नवीन ऊर्जा का संचार हो ताकि हम निगम के अपने लक्ष्यों को पूरा कर राष्ट्र के निर्माण में लगातार अपना योगदान देना जारी रखें।

विद्युत उत्पादन के अपने मूलभूत कार्य के साथ–साथ निगम भारत सरकार द्वारा निर्धारित किए गए सभी क्षेत्रों के लक्ष्यों को उत्कृष्टता के साथ पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है। इसी क्रम में निगम में राजभाषा हिंदी के बेहतर कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने पर पूरा ध्यान दिया जा रहा है। यहां यह बताना प्रासंगिक है कि माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति ने 07 दिसंबर, 2020 को निगम के एनसीआर कार्यालय, कौशांबी में संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी के प्रयोग में की गई प्रगति का पुनर्विलोकन किया और उक्त कार्यालय में राजभाषा हिंदी की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। माननीय संसदीय राजभाषा समिति ने राजभाषा कार्यान्वयन में गति लाने के लिए अनेक बहुमूल्य सुझाव भी दिए।

राजभाषा गृह पत्रिका ''पहल'' निगम में राजभाषा कार्यान्वयन में गति देने का भरपूर प्रयास कर रही है जिसके प्रकाशन में निगम के अधिकारी एवं कर्मचारी अपनी ओर से भरपूर योगदान दे रहे हैं। मैं पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों और पत्रिका के संपादक मंडल को साधूवाद देता हूं तथा कामना करता हूं कि हम सब राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पित रहें। इन्हीं अपेक्षाओं एवं आकांक्षाओं के साथ पुनः आप सभी को नव वर्ष की शुभकामनाएं !

धन्यवाद !

विजय गोयल
निदेशक(कार्मिक)

आप बंद मुट्ठी से हाथ नहीं मिला सकते हैं – **महात्मा गांधी**

संपादकीय

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ हिंदी गृह पत्रिका ''पहल'' का विविधता युक्त 26वां अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत है। आशा है कि पूर्व में प्रकाशित किए गए अंकों की भांति यह अंक भी आपको रुचिकर लगेगा। जिस समय यह अंक आपके कर–कमलों में होगा, उस समय नए वर्ष का आगाज हो चुका होगा और आप सर्दियों की गुनगुनी धूप में बैठकर इसका आनंद लेगें। इस अंक के प्रकाशन में यह कोशिश की गई है कि इसमें विविध विषयों को शामिल किया जाए तथा इनके साथ ही निगम में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति को भी प्रतिबिम्बित किया जाए, क्योंकि यह अंक सितंबर से दिसंबर, 2020 की अवधि का है इसलिए निगम में सितंबर माह में आयोजित किए गए हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रमों के आयोजनों को प्रमुखता से स्थान दिया गया है। कोविड–19 के कारण सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए इस प्रकार के आयोजन करना और उनमें निगम के अधिकाधिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों की प्रतिभागिता सुनिश्चित करना वास्तव में बहुत चुनौतीपूर्ण कार्य था। कारपोरेट कार्यालय में तो इस दौरान सभी कार्यक्रम पूर्ण रूप से ऑनलाइन वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित किए गए तथा निगम की यूनिटों एवं कार्यालयों में जहां नेट कनेक्टिविटी या अन्य तकनीकी कारणों से समस्या उत्पन्न हो रही थी, ऐसे स्थानों पर भारत सरकार द्वारा जारी एसओपी का ध्यान रखते हुए उक्त कार्यक्रम आयोजित किए गए।

पिछले अंकों के लिए हमें बड़ी संख्या में फीडबेक प्राप्त हुए हैं। इनमें सुश्री मंजुला सक्सेना, उप सचिव (अनुसंधान), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली ने राजभाषा विभाग की ओर से पहल पत्रिका के प्रकाशन में किए जा रहे प्रयासों की सराहना की है साथ ही उन्होंने पत्रिका को ओर अधिक प्रेरणाप्रद एवं विचारोत्तेजक बनाने हेतु अनेक सुझाव भी दिए हैं जिससे यह पत्रिका केंद्र सरकार के कार्मिकों को हिंदी में सरकारी कामकाज करने के लिए प्रेरित करने में प्रभावशाली भूमिका निभा सके। मैं संपादक मंडल की ओर से आश्वस्त करता हूं कि सुश्री सक्सेना के सुझावों को पत्रिका में समाविष्ट करने का पूरा प्रयास किया जाएगा। इनके साथ ही डॉ. राजनारायण अवस्थी, वरि. अधिकारी (राजभाषा) एवं प्रभारी, राजभाषा अनुभाग, इलेक्ट्रॉनिक्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, श्री आशुतोष आनंद, प्रबंधक, कार्मिक (नीति), टीएचडीसी इंडिया लि., श्री दिलीप कुमार द्विवेदी, प्रबंधक, कार्मिक–वेलफेयर, टीएचडीसी इंडिया लि., ऋषिकेश, श्री राजपाल आर्य, सहायक टंकक, सुरक्षा विभाग, कोटेश्वर ने भी पत्रिका के प्रकाशन की सराहना की है।

हम आप सभी फीडबेक देने वाले गणमान्य व्यक्तियों का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं कि आपने संपादक मंडल की मेहनत एवं ईमानदार प्रयासों को सराहा और हमें आगे और भी अधिक प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित किया। आपके फीडबेक हमारे भीतर और अधिक ऊर्जा का संचार करते हैं और हम अगले अंकों को पहले से भी अधिक रोचक बनाने में जुट जाते हैं। आपसे निवेदन है कि इसी प्रकार हमारा पथ प्रदर्शन करते रहें और साथ ही निगम के समस्त अधिकारीगणों एवं कर्मचारी वृंद से मेरा आग्रह है कि अपने लेख, रचनाएं अधिक से अधिक संख्या में भेजते हुए राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में अपना योगदान देना जारी रखें।

धन्यवाद !

पंकज कुमार शर्मा
वरि. हिंदी अधिकारी

यदि कोई एक व्यक्ति को भी अछूत कहा जाए तो भारत को अपना सर शर्म से झुकाना पड़ेगा – **लाल बहादुर शास्त्री**

पहल

हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
की राजभाषा गृह पत्रिका (अंक–26)

मुख्य संरक्षक
श्री डी.वी.सिंह
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक
श्री विजय गोयल
निदेशक(कार्मिक)

मार्गदर्शक
श्री ईश्वरदत्त तिग्गा
उप महाप्रबंधक (कार्मिक–स्थापना/हिंदी)

संपादक
पंकज कुमार शर्मा
वरि. हिंदी अधिकारी

संपादन सहयोग
नरेश सिंह
कनि. अधिकारी (हिंदी)

मंजु तिवारी
उप अधिकारी (कार्यालय प्रशासन)

संपर्क सूत्र
संपादक
''पहल''
हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
भागीरथी भवन, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड,
ऋषिकेश–249201, उत्तराखंड
दूरभाष : 0135–2473614

पहल पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। इनसे टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

विषय सूची

लेख/तकनीकी लेख/प्रेरक प्रसंग

1. महात्मा गाँधी के विचारों का महत्व 4
2. मानवता 6
3. संयुक्त राष्ट्र संघ की राजभाषाएं 7
4. सामाजिक बुराइयां 8
5. बूढ़ी दीवाली पर्व 9
6. कलम सूत्र 10
7. ''विटामिन–ई : विटामिन एक फायदे अनेक'' 11
8. हिंदी टाइपिंग के लिए यूनिकोड एकमात्र विकल्प 13

कविता

9. कर्मयोगी/उलझन 15
10. एक जीव की लाजवाब पंक्तियां 16
11. मां भारती 17
12. योग से निरोग एक प्रयोग 18
13. एक किताब है जिंदगी/वक्त 19
14. कुछ पल/हँसी 20
15. कोरोना की महामारी/पहाड़ियों की बात 21

राजभाषा गतिविधियां एवं आयोजित कार्यक्रम

16. हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा का आयोजन 22
17. हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन 36
18. हास्य लेखन प्रतियोगिता का आयोजन 38
19 संपादक के नाम पाती 39
20 हास–परिहास 40
21 डॉ. रामविलास शर्मा 41

लेख

महात्मा गाँधी के विचारों का सन् 2020 में महत्व

(02 अक्टूबर गांधी जयंती पर विशेष)

प्रशांत चौधरी, वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी, ऋषिकेश

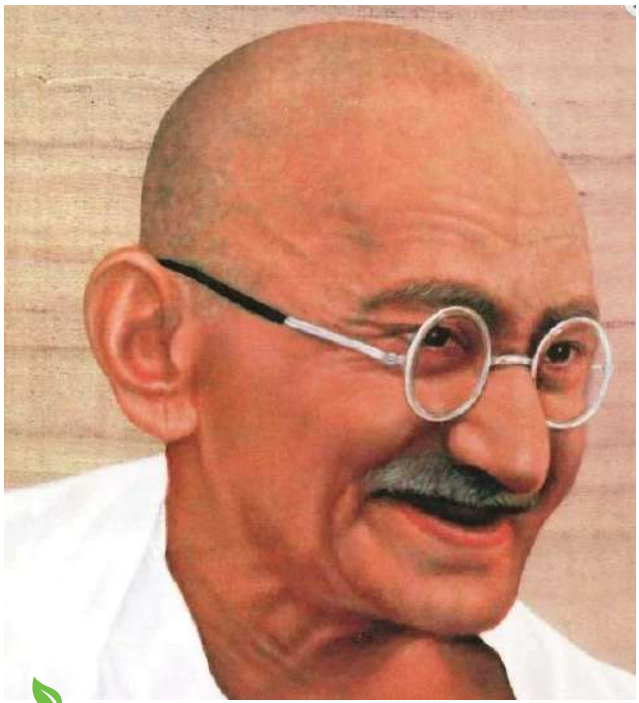

महात्मा गाँधी, जिन्हें हम बापू या फादर ऑफ द नेशन भी कहते है, का जन्म आज से लगभग 150 साल पहले गुजरात में हुआ था। इन 150 सालों में हमने अंग्रेजी शासन से न सिर्फ आजादी प्राप्त की अपितु विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाने में भी कामयाब रहे। इन 150 साल में समाज में, तकनीकी में, राजनीति में और सोच में बहुत परिवर्तन आए किन्तु अद्भुत बात यह है कि आज भी महात्मा गाँधी की सीख और मूल्य उतने ही नवीन और महत्वपूर्ण हैं जितने सन् 1900 में थे। इस लेख के जरिए मैं बापू के सामाजिक, सैद्धान्तिक, नेतृत्व और आर्थिक विचारों की समीक्षा करने की कोशिश करूँगा। साथ ही साथ दैनिक जीवन में हम इन मूल्यों को कैसे जी सकते हैं, यहां उस पर भी विश्लेषण करने की कोशिश की गयी है:–

दूसरों के प्रति संवेदना

महात्मा गाँधी एक समृद्ध परिवार से आते थे। किन्तु उनकी सादगी और संवेदना ही थी जिसकी वजह से उन्होंने भारत के गरीबों का दुःख और वेदना समझी। कहा जाता है कि जब बापू मद्रास में सन् 1921 में भ्रमण कर रहे थे, तब उन्होंने देखा कि कुछ लोग तन को ढकने के लिए कपड़ा तक नहीं खरीद सकते। इससे वे बहुत आहत हुए और थ्री पीस सूट से धोती पहनने लगे। आज के समय में बड़ी–बड़ी लीडरशिप की किताबों में अकसर "इम्पेथी" शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। मुझे नहीं लगता इससे बड़ा "इम्पेथी" यानि सहानुभूति का उदाहरण और कहीं मिलेगा। महात्मा गाँधी ने अपने जीवन के अधिकतर वर्ष एक फकीर की भांति बिताए। महात्मा गाँधी ने सर्वोदय का सिद्धांत दिया जिसमें समावेशी विकास की बात की गई और सब देशवासियों को मिल–जुल कर रहने का संदेश मिला। इसमें कुछ चौंकाने वाला नहीं था, जब सन् 2015 में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने "सबका साथ, सबका विकास" का नारा देकर गांधीजी के सिद्धांतों की जीवंतता का एहसास दिलाया।

अपने मूल्यों पर हर हाल में अडिग रहना

महात्मा गाँधी सत्य और अहिंसा के पथ पर चलते थे। सन् 1920–1922 में पूरे देश में बापू के नेतृत्व में

जो शासन करते हैं उन्हें देखना चाहिए कि लोग प्रशासन पर किस तरह प्रतिक्रिया करते हैं।
अंततः जनता ही मुखिया होती है – **लाल बहादुर शास्त्री**

असहयोग आंदोलन पूरे जोर–शोर से चल रहा था। किंतु चौरा चोरी की घटना में हिंसा होने से बापू ने पूरे भारत में आंदोलन वापस ले लिया। इसकी वजह से उस समय के कई कांग्रेसी नेता और खिलाफत आंदोलन के नेता बापू से नाराज हुए। किन्तु बापू को बर्दाश्त न था कि उनके उसूलों के खिलाफ जाकर आंदोलन करना। आज के समय में हमें ऐसे ही नागरिकों की जरुरत है जो अपने मूल्यों को नफा नुकसान से ऊपर रख पाएं। बापू के लिए परिणाम से कहीं ज्यादा जरुरी था, वो रास्ता जो उसूलों से बना था।

सबको साथ लेकर आगे बढ़ना

बापू ने एक चीज समझ ली थी, हमारा देश तब तक गुलाम रहेगा, जब तक हम आपस में बंटे रहेंगे। यह बापू का ही चमत्कार था कि देश के हर कोने से लोग आजादी के आंदोलन में जुड़ने लगे। इसे अकसर मैनेजमेंट गुरु "कैरिसमेटिक लीडरशिप" कहते हैं। बापू के आने के बाद घर–घर से महिलाएं, हरिजन और गाँव देहात के इलाके आंदोलन से जुड़ने लगे। बापू से प्रभावित होकर बहुत से विदेशी नागरिक भी भारत के राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़े जैसे कि मदेलिन स्लेड (मीराबेन)। यह बापू की दूर दृष्टि ही थी जिसने सब मतभेदों को दूर करके सबको एक मकसद दिया। आज हर क्षेत्र में हमें ऐसे ही लीडर्स की जरुरत है।

स्वदेशी और आत्मनिर्भर

अंग्रेजों के राज ने हमें अगर कुछ सिखाया तो यह कि देश तभी आगे बढ़ सकता है, जब तक वो दूसरों के भरोसे न हो। बापू यह बात बहुत पहले समझ गए और उन्होंने खादी एवं हस्तशिल्प को अधिक से अधिक बढ़ावा देने पर जोर दिया। आज उनके जन्म के 150 साल बाद माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी ने "आत्मनिर्भर भारत" का नारा देकर फिर से बापू के विचारों को जीवंत कर दिया। ग्लोबलाइजेशन के कारण आज सब देश एक दूसरे पर निर्भर हैं। किन्तु यह निर्भरता सीमित रहे तो ही देश का विकास हो सकता है।

ईमानदारी का महत्व

2019 में दी गई ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की "करप्शन परसेप्शन इंडेक्स" रिपोर्ट के हिसाब से भारत का स्थान दुनिया में 80वां आता है। इससे यह साफ है कि एक समाज के तौर पर हम बापू के सिखाए गए नैतिक मूल्यों जैसे कि सत्य और ईमानदारी से अभी भी काफी दूर हैं। बापू के जैसी सच्चाई और ईमानदारी से ही देश में गुड गवर्नेंस यानि सुशासन आ सकता है।

मजदूरों और उद्योगों पर बापू के ख्याल

महात्मा गाँधी के भारत में राजनैतिक सफर की शुरुआत में सन् 1918 में अहमदाबाद मिल स्ट्राइक चल रही थी। मजदूरों ने बापू से हस्तक्षेप करने का अनुरोध किया। बापू ने मजदूरों को सत्याग्रह और अहिंसा का मार्ग दिखाया। बापू मजदूरों और मैनेजमेंट के मतभेद "मध्यस्थता" से सुलझाने में विश्वास रखते थे। बापू का मानना था कि किसी भी तरह से मजदूरों या मैनेजमेंट के आत्मसम्मान को ठेस ना पहुंचे।

गांधी जी के विचारों ने उनके जाने के बाद भी बराक ओबामा, स्टीव जॉब्स, नेल्सन मंडेला और न जाने कितने ही लोगों को प्रभावित किया और उन्हें सत्य और अहिंसा की राह दिखाई। महात्मा गाँधी की महानता का इससे बड़ा सबूत और क्या होगा कि उनके जाने के बाद भी उनके विचार दुनियाभर के लोगों को एक नई राह दिखाएं और इस दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने में मदद करें।

कहानी

मानवता

नीलेन्द्र बहुगुणा, कनिष्ठ कार्यपालक, टिहरी

टिहरी गढ़वाल में एक छोटा सा गांव बड़कोट है वहां की आबादी बहुत ज्यादा नहीं है। गांव में सेब की फसल अच्छी होती है। सुबह जब सूरज की किरण पहाड़ की चोटियों पर पड़ती हैं तो ऐसा लगता है जैसे स्वयं सूर्य देव वहां विराजमान हो रहे हैं। उसी गांव में राम सिंह नाम का एक किसान रहता था। ज्यादा तो नहीं लेकिन उसके पास इतनी जमीन थी कि वो खेती करके अपने परिवार का पेट पाल सके। उसके खेत में सेब की फसल होती थी। वह सेब मंडी में बेचकर अपने परिवार का पालन पोषण ठीक प्रकार से कर रहा था। घर में पत्नी थी और एक 20 साल की लड़की थी। पाई–पाई जोड़कर उसके विवाह के लिए पैसे जोड़ रहा था लेकिन एक दिन ऐसी आंधी आई कि उसका सब कुछ तिनके ती तरह बिखर कर रह गया।

उसकी पत्नी को गले में पहले हल्का सा दर्द रहता था जब दर्द असहनीय हो गया तो राम सिंह अपनी पत्नी को शहर के अस्पताल में दिखाने के लिए लेकर आ गया। डॉक्टर ने कुछ टेस्ट किए तो पता चला कि उसकी पत्नी के गले में गांठ बन रही थी जो धीरे–धीरे कैंसर का रूप ले रही थी। यह सब सुनकर राम सिंह के पैरों तले जमीन खिसक गई। राम सिंह अपनी पत्नी को बहुत चाहता था वो अपनी पत्नी का इलाज कराने के लिए शहर में कमरा लेकर रहने लगा। धीरे–धीरे बेटी की शादी के लिए जोड़े गए पैसे भी इलाज में खर्च हो गए। बाद में खेत भी गिरवी रखने की नौबत आ गई। लेकिन शायद भगवान को कुछ और ही मंजूर था। बहुत प्रयास करने के बाद भी राम सिंह की पत्नी को डॉक्टर बचा नहीं सके।

कहते हैं कि भगवान अच्छों के साथ कुछ बुरा नहीं होने देता लेकिन राम सिंह एक सीधा सादा सच्चा किसान था, उसने अपने जीवन में कभी किसी का बुरा नहीं किया था। शायद भगवान को यही मंजूर था। खेत भी गिरवी रखे थे और पास का पैसा भी सब पत्नी के इलाज में लग गया। राम सिंह ने हार नहीं मानी वह एक मेहनती किसान था। मेहनत से उसे कुछ परहेज नहीं था। राम सिंह दूसरों के खेत में काम करने लगा। उसकी बेटी भी पढ़ी लिखी थी वह भी एक प्राइवेट स्कूल में पढ़ाने लगी। कुछ वर्ष बीतने के बाद राम सिंह ने सोचा कि पहले अपनी बेटी के हाथ पीले करके बाद में खेत भी छुड़ा लेगा। राम सिंह के पास जब पैसा जमा हो गया था तो वह अपनी बेटी के लिए वर तलाश करने लगा।

फिर मार्च का महीना सबके लिए एक तूफान लेकर आया। कोविड–19 ने पूरे देश को अपनी चपेट में ले लिया। कोरोना महामारी से गांव भी नहीं बच सके। पूरे देश में पूर्ण लॉकडाउन होने के कारण सबके व्यवसाय बंद हो गए। सरकार भी मदद कर रही थी लेकिन फैक्ट्री बंद होने के कारण गांव के जो लोग दूसरे शहरों में नौकरी करते थे या कोई धंधा करते थे वो लोग गांव वापस आने लगे। गांव में युवकों का आने का सिलसिला आरंभ हो गया था, प्रत्येक दिवस कोई न कोई गांव वाला आ रहा था। कुछ सामाजिक संस्था भी मदद को आगे आई। सरकार ने भी खाने–पीने का इंतजाम किया लेकिन जिंदगी ऐसे नहीं चलती है। गांव के लोगों के पास ऐसा कोई काम नहीं था कि जो गांव में लोग वापस आए हैं उनको रोजगार दे सकें।

एक दिन राम सिंह रात को टहलने के लिए निकला तो उसने देखा कि नदी के पास चार युवक परेशानी की हालत में आत्महत्या करने की बात कर रहे थे। राम

कानून का सम्मान किया जाना चाहिए ताकि हमारे लोकतंत्र की बुनियादी संरचना बरकरार रहे – **लाल बहादुर शास्त्री**

सिंह ने उन्हें अपने पास बैठाकर समझाया कि आत्महत्या पाप है, अच्छे दिन नहीं रहे तो बुरे दिन भी नहीं रहेंगे। राम सिंह ने कहा कि यदि आपका मस्तिष्क सक्रिय और सजग है तो इस दौरान भी आप सर्वोत्तम समाधान निकाल सकते हैं। हीरे को बिना घर्षण के चमकाया नहीं जा सकता, इसी तरह आदमी बिना संघर्षो के संवर नहीं सकता है। राम सिंह ने कहा कि सुख–दुख के अनुभवों, धूप, छांव के वातावरण से प्रभावित उतार–चढ़ाव के पथ पर अपनी अनुभूतियों और संवेदनाओं को किनारे कर फिर से एक बार अपने आपको प्रतिस्थापित करने का प्रयास करो।

वे चारों युवक बिलख–बिलख कर रोने लगे। वे युवक कहने लगे कि केवल संघर्ष से रोजगार नहीं होता है। राम सिंह ने कहा कि मैं तुम्हारी मदद करूंगा। राम सिंह ने बेटी की शादी के लिए जमा किए पैसे गांव के राहत कोष में दे दिए, जिससे बेरोजगार युवक अपना कुछ रोजगार आरंभ कर सकें। गांव के प्रधान ने कहा कि यह पैसे तो तुमने बेटी की शादी के लिए और खेत छुड़ाने के लिए रखे थे लेकिन राम सिंह के जवाब ने प्रधान को उसके आगे नतमस्तक कर दिया। राम सिंह ने कहा कि इस समय महामारी के मारे युवकों को अच्छी जिंदगी देना ही सबसे बड़ा पुण्य है। यह काम बेटी के कन्यादान से भी बड़ा है। प्रधान की आंखों से आंसू बहने लगे। जो आदमी अपनी खुशियां दूसरे के लिए बलिदान कर दे वो इंसान तो क्या किसी देवता से कम नहीं है। बेटी ने भी अपने पिता के इस कदम की सराहना की। बेटी ने कहा कि पिताजी खेत भी एक दिन वापस मिल जाएंगे और मेरी शादी भी हो जाएगी लेकिन इस समय महामारी से पूरे गांव को सुरक्षित रखना है और गांव के किसी भी युवक को आत्महत्या जैसे जघन्य कृत्य के बारे में सोचने से रोकना है। यही सच्चा घर्म है जो दूसरों के सुख में अपना सुख अनुभव करे। यही सच्ची मानवता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ की राजभाषाएं

संयुक्त राष्ट्र संघ ने 06 भाषाओं को "राजभाषा" स्वीकृत किया है। इनमें अरबी, चीनी, अंग्रेजी, फ्रांसीसी, रूसी और स्पेनिस शामिल हैं परंतु इनमें से केवल दो भाषाओं (अंग्रेजी और फ्रांसीसी) को संचालन भाषा माना जाता है।

संयुक्त राष्ट्र की स्थापना के समय, केवल चार राजभाषाएं स्वीकृत की गई थी (चीनी, अंग्रेजी, फ्रांसीसी, रूसी) और 1973 में अरबी और स्पेनिस को भी इनमें सम्मिलित कर लिया गया। इन भाषाओं के बारे में विवाद उठता रहता है। कुछ लोगों का मानना है कि राजभाषाओं की संख्या 06 से कम की जानी चाहिए, परंतु अनेक का मानना हैं कि राजभाषाओं को बढ़ाना चाहिए और हिंदी को भी संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बनाया जाना चाहिए।

लेख

सामाजिक बुराइयां

दीपक राज मेहता, अभिलेख अधिकारी, ऋषिकेश

आज हम कितने भी आधुनिक कहे जाते हों, परंतु वर्षों से चली आ रही कई तरह की बुराइयां अभी तक हमारे समाज में व्याप्त हैं जिनमें सबसे घृणित अपराध/बुराई कन्या भ्रूण हत्या है। हम अभी तक इस सामाजिक बुराई से बाहर नहीं निकल पाएं हैं और कुछ लोगों ने तो इसे आज व्यापार (कमाई का जरिया) बना दिया है। कन्या भ्रूण हत्या का दर्द सबसे ज्यादा औरत को सहना पड़ता है। कुल दीपक की चाह ने समाज को अंधा बना दिया है, परंतु हम भूल जाते हैं कि औरत तो धरती के समान है, जैसा बीजारोपण होगा वैसा ही फल प्राप्त होगा। कन्या भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक बुराई को अगर जड़ से समाप्त करना है तो सबसे पहले हमें अपनी सोच में परिवर्तन लाना होगा। जहां तक रहा प्रश्न, सरकार/प्रशासन का, उनकी भूमिका अहम है। सोच की बात करें तो हमें अपनी इस सोच को बदलना होगा कि कुल दीपक लड़का होता है, जबकि मेरा मानना है कि आज के समय यह सोच सही नहीं है और बहुत से लोग मेरी इस बात से सहमत भी होंगे कि आज लड़कियों ने हर क्षेत्र में असाधारण तरक्की कर अपने मां-बाप का नाम रोशन किया है। कन्या भ्रूण हत्या की तरह एक और बुराई हमारे समाज में है, और वह है दहेज प्रथा। दुर्भाग्य से इसका शिकार भी औरत ही होती है। मेरा मानना है कि औरत अगर औरत का साथ दे तो इस बुराई पर काफी हद तक काबू पाया जा सकता है। औरत के कई रूप होते हैं, मां, बहु, सास, बेटी व बहन, बस उसे केवल अपने स्तर से इन सभी भूमिकाओं में सिलसिलेवार सकारात्मक भूमिका निभाने की जरुरत है। इन बुराइयों को खत्म किए जाने के लिए सरकार की भूमिका बेहद अहम है। उदाहरण के तौर पर, दहेज प्रथा पर पूर्णतया लगाम और ना मानने या उल्लंघन करने पर और सख्त सजा का प्रवाधान होना चाहिए। लड़कियों के साथ छेड-छाड़ एवं छेड़खानी पर सख्त सजा/दंड का प्रावधान और इसके साथ ही ऐसे अपराधों के लिए अपराधियों को दंडित करने के लिए फास्ट ट्रेक कोर्ट के माध्यम से मामलों का निपटारा तुरन्त किए जाने की जरुरत है। कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा एवं लड़कियों/महिलाओं से छेड़-छाड़, इन सबके लिए कानून में परिवर्तन एवं उन पर सख्ती से अमल करने की जरुरत है, तभी हम इन सामाजिक कुरीतियों को खत्म कर सकते हैं। मेरा अपना मानना है कि कानून में परिवर्तन के साथ-साथ हमें अपनी सोच में परिवर्तन लाने की जरुरत है, क्योंकि शुरुआत हमें अपने आपसे ही करनी पड़ेगी, तभी हम समाज में परिवर्तन ला पाएंगे।

कमजोर कभी क्षमा नहीं कर सकता. क्षमाशीलता बलवानों का गुण है – **महात्मा गांधी**

संस्कृति

बूढ़ी दीवाली पर्व

दिलीप कुमार द्विवेदी, प्रबंधक (कार्मिक–वेलफेयर), ऋषिकेश

बूढ़ी दीवाली को हर साल हर्षोल्लास एवं पारंपरिक तरीके से मनाया जाता है। जौनसार बावर क्षेत्र एवं कुल्लू जिला के निरमंड में भी बूढ़ी दीवाली मनाई जाती हैं। हिमाचल के सिरमौर जिले के गिरिपार क्षेत्र की 125 पंचायतों में भी बूढ़ी दीवाली मनाई जाती है। यहां बूढ़ी दीवाली को 'मशराली' के नाम से मनाया जाता है। यह गिरिपार के अतिरिक्त शिमला जिले के कुछ गांवों में भी मनाई जाती है। ग्रामीण पराकड़िया गीत, विरह गीत, भयूरी, रासो, नाटियां, स्वांग के साथ हुड़क नृत्य करके जश्न मनाते हैं। कुछ गांव में बूढ़ी दीवाली के त्योहार पर बढ़ेच नृत्य करने की परंपरा भी है जबकि कुछ गांव में अर्ध रात्रि के समय एक समुदाय के लोगों द्वारा बुड़ियात नृत्य करके देव परंपरा को निभाया जाता है। बूढ़ी दीवाली के उपलक्ष्य पर ग्रामीण पारंपरिक व्यंजन बनाने के अतिरिक्त आपस में सूखे व्यंजन मूड़ा, चिवड़ा, अखरोट वितरित करके दीवाली की शुभकामनाएं देते हैं। इसके अतिरिक्त स्थानीय ग्रामीणों द्वारा हारूल गीतों की ताल पर लोक नृत्य किया जाता है। ग्रामीण इस त्यौहार पर अपनी बेटियों और बहनों को विशेष रूप से आमंत्रित करते हैं। बूढ़ी दीवाली मनाने के पीछे तर्क दिया जाता है कि यहां रहने वाले लोगों को भगवान राम के अयोध्या पहुंचने की खबर एक महीने देरी से मिली थी। यहां के रहने वाले लोगों ने जब यह सुखद समाचार सुना तो खुशी से झूम उठे और उन्होंने देवदार और चीड़ की लकड़ियों की मशालें जलाकर अपनी खुशी जाहिर की थी। बताया जाता है कि तब ही से यहां पर बूढ़ी दीवाली मनाने की परंपरा चली आ रही है। यहां के रहने वाले लोग आज भी दीवाली की अगली अमावस्या तिथि को बूढ़ी दीवाली मनाते हैं। यह बलिराज के दहन की प्रथा भी है। विशेषकर कौरव वंशज के लोगों द्वारा अमावस्या की आधी रात में पूरे गांव की मशाल के साथ परिक्रमा करके एक भव्य जुलूस निकाला जाता है और बाद में गांव के सामूहिक स्थल पर एकत्रित होकर घास, फूस तथा मक्की के टांडे में अग्नि देकर बलिराज दहन की परंपरा निभाई जाती है। पांडव वंशज के लोग ब्रह्म मुहूर्त में बलिराज का दहन करते हैं। लोगों का विश्वास है कि अमावस्या की रात को मशाल जुलूस निकालने से क्षेत्र में नकारात्मक शक्तियों का प्रवेश नही होता और गांव में समृद्धि के द्वार खुलते हैं।

भारत का सबसे प्रसिद्ध त्योहार दीपोत्सव विदेशों के आँगन को भी रोशन करता है। शहरों में त्योहारों का स्वरूप अब ज्यादा व्यावसायिक होता जा रहा है।

पर्वों की आत्मीयता कम हो रही है लेकिन जौनसार बावर में पुरातन संस्कृति व मेले तथा त्योहारों में आत्मीयता काफी हद तक कायम है। इन क्षेत्रों में इस आयोजन से जुड़ी किवदंतियां महाभारत व रामायण युग से निकली है। दीवाली के दिनों में ग्रामीण क्षेत्रों में काम की अधिकता होती है। यहां इन दिनों घासनियों (घास उगाने वाली जगह) से सर्दी के लिए घास काटकर रखना होता है। मक्के की कटाई, अरबी निकाली जा रही होती है। अदरक निकालकर बाजार पहुंचाना होता है। ऐसे अस्त व्यस्त समय के बीच दीवाली मनाने की फुरसत नही मिलती इसलिए बूढ़ी दीवाली मनाई जाती है। बूढ़ी दीवाली के पहले दिन मक्की के सूखे टांडों को जलाया जाता है। ढोल करनाल, दमाऊ के लोकसंगीत में गूँथी शिरगुल देव की गाथा गाई जाती है। कार्यक्रम देर रात तक चलता है। अमावस्या के मौके पर दीवाली का मुख्य नृत्य 'बूढ़ा नृत्य' होता है। हुड़क बजाते हैं, शाम को सूखी लकडी एकत्र कर जलाई जाती है। अगले दिन पांड़व की देव पूजा होती है। दीवाली के दिन उड़द भिगोकर, पीसकर, नमक मसाले मिलाकर आटे के गोले के बीच भरकर पहले तवे पर रोटी की तरह सेका जाता है फिर सरसों के तेल में तल (फ्राई) कर घर के शुद्ध घी के साथ खाया जाता है। मुड़ा, मक्की भूनकर व धान को नमक के पानी मे कई दिन भिगोकर उसका छिलका अलग करने के लिए उसे भूनकर पत्थर की औखली में कूटकर चिवड़ा बनाकर खाया और खिलाया जाता है।

इन पहाड़ी खानों का अपना विशिष्ट स्वाद होता है। अतः इस बूढ़ी दीवाली का हमारी संस्कृति से बहुत गहरा लगाव है। हमें अपनी संस्कृति और मनाये जाने वाले सभी पर्वों की जानकारी एवं उनका इतिहास जानना अत्यन्त आवश्यक है।

कलम सूत्र

'धम्मपद' से संकलित

इन्द्रराम नेगी, प्रबंधक (राजभाषा), टिहरी

किसी भी चीज़ पर (बस) इसलिए विश्वास न करें, क्योंकि आपने इसे सुना है। परंपराओं पर यह समझकर विश्वास मत करना, क्योंकि वे कई पीढ़ियों से चली आ रही है। किसी भी चीज पर इसलिए विश्वास न करें, क्योंकि इसे कई लोगों ने बताया और अफवाह बनी है। किसी भी चीज पर सिर्फ इसलिए विश्वास न करें, क्योंकि यह आपकी धार्मिक पुस्तकों में लिखी गई है। केवल प्रभाव की वजह से यह सोचकर किसी भी बात पर विश्वास न करें कि यह आपके शिक्षकों और बड़ों ने कही है। लेकिन अवलोकन और विश्लेषण के बाद, जब आपको लगे कि यह सब कुछ तर्कयुक्त है, और हर एक के हित और फायदे के लिए सहायक है फिर इसे स्वीकार करें और इसके अनुरूप आचरण करें।

मैं उसे धार्मिक कहता हूँ जो दूसरों का दर्द समझता है – **महात्मा गांधी**

स्वास्थ्य परिचर्चा

"विटामिन-ई : विटामिन एक फायदे अनेक"

(लाइव हिंदुस्तान डॉट कॉम से साभार संकलित)

यूं तो हमारे शरीर के लिए सभी विटामिन्स का अपना–अपना महत्व है, लेकिन उनमें कुछ की खास भूमिका होती है। ऐसे विटामिन्स में प्रमुख है, विटामिन–ई। चाहे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत बनाए रखने की बात हो या शरीर को एलर्जी से बचाए रखने की या फिर कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित रखने में प्रमुख भूमिका निभाने की, यह विटामिन बहुत ही जरूरी होता है।

विटामिन–ई हमारे संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है। विटामिन–ई वसा में घुलनशील विटामिन है। यह एक एंटीऑक्सीडेंट के रूप में भी कार्य करता है। इसके आठ अलग–अलग रूप होते हैं। कोशिकाएं एक दूसरे से इंटरएक्ट करने में विटामिन–ई का उपयोग करती हैं और कई महत्वपूर्ण कार्य करती हैं।

विटामिन–ई के स्रोत

अंडे, सूखे मेवे, बादाम और अखरोट, सूरजमुखी के बीज, हरी पत्तेदार सब्जियां, शकरकंद, सरसों, शलजम, एवोकेडो, ब्रोकली, कड लीवर ऑयल, आम, पपीता, कद्दू, पॉपकार्न।

शरीर के लिए कितनी मात्रा है उपयोगी

किसी व्यक्ति को प्रतिदिन विटामिन–ई की कितनी मात्रा की आवश्यकता होती है, यह उसकी उम्र और लिंग पर निर्भर करता है। इसके अलावा गर्भावस्था, स्तनपान और अन्य बीमारियों में इसकी अधिक मात्रा की आवश्यकता होती है।

- छह माह तक के नवजात शिशु–04 मिलीग्राम/दिन
- 07 से 12 माह तक के नवजात शिशु–05 मिलीग्राम/दिन
- 1 से 3 वर्ष तक के बच्चे–06 मिलीग्राम/दिन
- 4 से 8 वर्ष तक के बच्चे–07 मिलीग्राम/दिन
- 9 से 13 वर्ष तक के बच्चे–11 मिलीग्राम/दिन
- 14 वर्ष और उससे बड़े–15 मिलीग्राम/दिन
- स्तनपान कराने वाली महिलाएं–17 मिलीग्राम/दिन

विटामिन–ई की कमी के गंभीर लक्षण

- शरीर के अंगों का सुचारू रूप से कार्य न कर पाना।
- मांसपेशियों में अचानक से कमजोरी आ जाना।
- आंखों के मूवमेंट में असामान्य स्थिति पैदा हो जाना।
- नजर कमजोर हो जाना। दिखने में झिलमिलाहट महसूस होना।
- चलने में लड़खड़ाहट होना। कई बार कमजोरी महसूस होना।
- प्रजनन क्षमता कमजोर हो जाना। शरीर में कमजोरी महसूस होना।

साइड इफेक्ट्स

विटामिन–ई युक्त भोजन खाना खतरनाक या नुकसानदेह नहीं है। हालांकि सप्लीमेंट के रूप में विटामिन–ई की हाई डोज लेना नुकसानदेह हो सकता है। इसकी अधिकता से ब्लीडिंग का खतरा बढ़ जाता है और मस्तिष्क में गंभीर ब्लीडिंग हो सकती है। गर्भवती महिला के शरीर में विटामिन–ई की अधिक मात्रा से बच्चे में बर्थ डिफेक्ट भी हो सकते हैं। इसलिए जरूरी है कि विटामिन–ई के सप्लीमेंट बिना डॉक्टर की सलाह के न लें, खासतौर पर जब आप रक्त को पतला करने वाली दवाईयों जैसे एस्प्रिन ले रहे हों। उन लोगों को भी विटामिन–ई का अधिक मात्रा में सेवन नहीं करना चाहिए, जिनमें विटामिन–के की कमी हो। इस बात के प्रमाण भी मिले हैं कि अगर नियमित रूप से अधिक मात्रा में विटामिन–ई का सेवन किया जाए तो मृत्यु भी हो सकती है।

विटामिन–ई के अन्य स्रोत

हमारा शरीर विटामिन–ई का निर्माण नहीं कर सकता है, इसलिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि इसे पर्याप्त मात्रा में लिया जाए। वैसे भोजन से विटामिन–ई प्राप्त करना कोई मुश्किल काम नहीं है। हम सभी खाना बनाने में तेल का उपयोग करते हैं, जो विटामिन–ई के अच्छे स्रोत हैं। इसलिए तेल का नियमित सेवन करें।

विटामिन–ई की उपयोगिता

» विटामिन–ई त्वचा की देखभाल करने और स्वस्थ रखने वाला विटामिन है। यह त्वचा को रूखेपन, झुर्रियों, समय से पहले बूढ़ा होने और सूरज की हानिकारक अल्ट्रावायलेट किरणों से बचाता है।
» यह लाल रक्त कणिकाओं के निर्माण में भी सहायता करता है।
» कई अध्ययनों में यह बात सामने आई है कि जिन लोगों के शरीर में विटामिन–ई की मात्रा अधिक होती है, उनमें दिल की बीमारियों का खतरा कम हो जाता है।
» विटामिन–ई मेनोपॉज के बाद महिलाओं में स्ट्रोक की आशंका को कम करता है।
» विटामिन–ई कैंसर से भी रक्षा करता है। कई शोधों में यह बात सामने आई है कि जिन लोगों को कैंसर होता है, उनके शरीर में विटामिन–ई की मात्रा कम होती है।
» 2010 में हुए एक अध्ययन के अनुसार जो लोग विटामिन–ई के सप्लीमेंट लेते हैं, उनमें अल्जाइमर्स होने का खतरा कम हो जाता है।
» विटामिन–ई दूसरे एंटी ऑक्सीडेंट्स के साथ मिलकर मैक्यूलर डीजनरेशन से बचाता है। यह रेटिना की सुरक्षा भी करता है।
» यह महिलाओं में मासिक धर्म के दौरान होने वाले दर्द से भी बचाता है।
» विटामिन–ई की कमी डायबिटीज का खतरा बढ़ा देती है।
» ब्रेस्ट कैंसर की रोकथाम में भी यह उपयोगी है।
» इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाता है।
» विटामिन–ई बाल झड़ने के लिए ली जाने वाली दवाइयों के साइड इफेक्ट को भी कम करता है।
» एलर्जी की रोकथाम में भी उपयोगी है।
» बच्चों में यह कंकाल तंत्र के विकास के लिए जरूरी है।
» शरीर में विटामिन–ए और के के भंडारों का रखरखाव करता है।
» यह शरीर में कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित करता है।

कुछ तथ्य

» विटामिन–ई ब्लडप्रेशर की दवाइयों के अवशोषण को रोकता है।
» शरीर में कोलेस्ट्रॉल का स्तर कम करने वाली दवाइयां विटामिन–ई का स्तर कम करती हैं।
» कैंसर की दवाइयां भी विटामिन–ई के स्तर को प्रभावित करती हैं।
» जिन लोगों के शरीर में वसा को अवशोषण करने में कठिनाई होती है, उनमें भी विटामिन–ई की कमी हो जाती है।
» विटामिन–ई कीमोथेरेपी के लिए उपयोग की जाने वाली दवाइयों के प्रभाव को कम कर देता है।
» समय पूर्व जन्मे बच्चे में जन्मजात ही विटामिन–ई की मात्रा कम होती है।
» विटामिन–ई को अवशोषित करने के लिए हमारे पाचनतंत्र को वसा की आवश्यकता होती है।

लोगों को सच्चा लोकतंत्र या स्वराज कभी भी असत्य और हिंसा से प्राप्त नहीं हो सकता है – **लाल बहादुर शास्त्री**

हिंदी अनुभाग की ओर से...

हिंदी टाइपिंग के लिए यूनिकोड एकमात्र विकल्प

एक समय था जब हिंदी में टाइप करना आसान नहीं था। टाइपराइटर के जमाने में तो सिर्फ टाइपिस्ट ही हिंदी में टाइप कर सकते थे। कम्प्यूटर के आ जाने के बाद भी गैर यूनिकोड फोंट के प्रयोग के कारण स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं आया। परन्तु यूनिकोड जैसी प्रणाली के विकसित हो जाने के बाद कम्प्यूटर टाइपिंग में आमूलचूल परिवर्तन हुआ है। इस प्रणाली में कोई भी व्यक्ति न केवल हिंदी में अपितु अन्य भारतीय भाषाओं तथा विदेशी भाषाओं में भी टाइप कर सकता है।

यूनिकोड प्रणाली पर कार्यालयों में बड़े पैमाने पर हिंदी कार्यशालाएं आयोजित की जाती रही हैं एवं व्याख्यान होते रहे हैं। राजभाषा विभाग भी प्रत्येक वर्ष कम्प्यूटर पर आधारित कार्यशालाएं आयोजित कर सरकारी कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। जिसके परिणामस्वरूप सरकारी कार्यालयों में हिंदी टाइपिंग में यूनिकोड का प्रयोग कर हिंदी में टाइप करना सुगम तो हुआ है परन्तु यह देखने में आया है कि इसका प्रयोग अधिकांश रूप से अधिकारी वर्ग ही कर रहा है और ऐसे कर्मचारी जो गैर यूनिकोड फोंट्स में कार्य करने के आदी हो गए हैं वे इसका लाभ उठाने में पता नहीं क्यों अभी भी संकोच कर रहे हैं। जबकि इस प्रणाली में ऐसे टूल्स विकसित किए जा चुके हैं जिनका प्रयोग कर वे उसी प्रकार टाइप कर सकते हैं जैसे वे गैर यूनिकोड फोंट में करते आ रहे हैं।

कम्प्यूटर युग के प्रारंभ होने के बाद यह आवश्यकता महसूस की गई कि जब तक कम्प्यूटर के माध्यम से हिंदी टाइपिंग नहीं हो पाएगी तब तक देश में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा नहीं मिल पाएगा। इसे दृष्टिगत रखते हुए हिंदी के अनेक फोंट जैसे कृतीदेव, अकृतीदेव, दिव्या, चाणक्य, कृष्णा आदि विकसित किए गए। परन्तु इन फोंट्स में काम करना आसान नहीं था। किसी फोंट में शुरू का अक्षर कट जाता था तो किसी में मात्रा, बिंदी, हलंत, आधे अक्षर, विशेष चिन्ह आदि बनाने की समस्या थी। इसके लिए इन फोंट्स के साथ इन्सर्ट ऑप्शन की व्यवस्था की गई जिसमें हिंदी में प्रयोग होने वाली सभी जटिल मात्राएं, करेक्टर, अक्षर आदि दिए गए। जिन्हें इन्सर्ट करने के अलावा कोई उपाय नहीं था।

इन फोंट्स में एक समस्या यह भी थी कि यदि कोई फाइल तैयार कर किसी दूसरे व्यक्ति को भेजी जाती थी तो वह उसे तब तक पढ़ी नहीं जा सकती थी जब तक कि उस कम्प्यूटर में भी वही फोंट इन्स्टॉल न हो। इसका कारण था इनकी असमान इनकोडिंग का होना। इसका समाधान करने के लिए उक्त फाइल के साथ उस फोंट को भी भेजना होता था तथा फाइल प्राप्त करने वाला सर्वप्रथम उस फोंट को अपने कम्प्यूटर में इन्स्टॉल करके ही उस फाइल को पढ़ पाता था। ऐसी ढ़ेर सारी समस्याएं हिंदी टाइपिंग में काफी दिनों तक बनी रही।

यूनिकोड में इनकोडिंग यूनिवर्सल रूप से की गई है। यूनिकोड प्रत्येक अक्षर के लिए एक विशेष संख्या प्रदान करता है, चाहे कोई भी कम्प्यूटर प्लेटफॉर्म, प्रोग्राम अथवा कोई भी भाषा हो। यूनिकोड स्टैंडर्ड को एपल, एच. पी, आई.बी.एम., जस्ट सिस्टम, माइक्रोसॉफ्ट, ऑरेकल, सैप, सन, साईबेस, यूनिसिस जैसी उद्योग की प्रमुख कम्पनियों ने अपनाया है।

यह विंडोज एक्स.पी के बाद विडोंज के सभी संस्करणों में इन्बिल्ट आ रहा है। इसे इनेबल करने की आवश्यकता नहीं है। यूनिकोड में हिंदी के अनेक फोंट मौजूद हैं जैसे

मंगल, एरियल यूनिकोड एमएस, अपराजिता, चंडास, गार्गी, लोहित देवनागरी, सरल, समयक देवनागरी आदि। परन्तु यह अपेक्षा की जाती है कि यूनिकोड के लिए मंगल फोंट का प्रयोग किया जाए। यूनिकोड के अन्य फोंट्स का प्रयोग सजावटी लिखावट के लिए किया जा सकता है।

यूनिकोड में कार्य करने के लिए सर्वप्रथम यह देखना आवश्यक है कि कम्प्यूटर के डेस्कटॉप पर नीचे दिए गए टास्कबार में दांयी ओर ENG या EN आ रहा है या नहीं।

यदि ENG या EN लिखा नहीं आ रहा है तो कम्प्यूटर में कुछ सैटिंग करने की आवश्यकता होगी। इसके लिए विंडोज 10 में Setting में जाकर Time & Language को क्लिक करें। उसके बाद जो विंडो खुलेगी उसमें Language को क्लिक करें और Add a Language को क्लिक करके हिंदी को Add करें। अब टास्कबार में दांयी ओर ENG दिखाई देगा। यहां हम जब ENG पर क्लिक करते हैं तो हमें दो ऑप्शन मिल जाएंगे। पहला ENG और दूसरा Hindi या Hi। इसकी आवश्यकता इसलिए है कि जब अंग्रेजी में कार्य करने की आवश्यकता हो तो ENG को क्लिक कर अंग्रेजी में टाइप कर सकें और जब हिंदी में कार्य करने की आवश्यकता हो तो Hindi या Hi को क्लिक कर हिंदी में कार्य कर सकें।

इसमें डिफाल्ट में हिंदी का जो कीबोर्ड है उसे इन्सिक्रप्ट कीबोर्ड कहा जाता है इसका ले–आउट निम्नानुसार है–

इस की–बोर्ड में कार्य करना आसान है और थोड़े से अभ्यास से ही इस पर परंपरागत रूप से प्रयोग किए जा रहे की–बोर्ड की अपेक्षा अधिक तेजी से टाइप किया जा सकता है। परन्तु काफी समय से कृतीदेव जैसे नॉन यूनिकोड फोंट में कार्य करने वाले टाइपिस्ट इस पर कार्य करने के इच्छुक नहीं थे। इसलिए अनेक प्रकार के अन्य टूल्स तैयार किए गए जिनके माध्यम से गैर यूनिकोड फोंट में कार्य करने वाले भी उसी प्रकार कार्य कर सकें जिस प्रकार वे परंपरागत तरीके से करते रहे हैं।

इनके साथ ही ऐसे अनेक टूल्स तैयार किए गए हैं जिनके माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह टाइप जानता हो या न जानता हो हिंदी में टाइप करने में सक्षम हो सके। ऐसे टूल्स का विवरण निम्नानुसार है–

1. गूगल इनपुट टूल
2. माइक्रोसॉफ्ट इंडिक इनपुट टूल
3. वाइस टाइपिंग

उपर्युक्त टूल्स प्रत्येक व्यक्ति को हिंदी में टाइप करने में सहायक सिद्ध हुए हैं। स्थानाभाव के कारण सभी टूल्स के बारे में यहां एक साथ जानकारी देना संभव प्रतीत नहीं होता। इनके बारे में हम अगले अंकों में विस्तार से जानकारी देंगे।

कविता

कर्मयोगी

मच्छर....
कितना मासूम और निरीह,
किसी के साथ कोई भेद–भाव नहीं,
कोई ऊंच–नीच, छोटे–बड़े का विचार नहीं।

मच्छर के लिए,
ईश्वर की बनाई हुई इस दुनिया में,
सब एक समान है, जीवन क्षणभंगुर है।

इसलिए.. मच्छर कभी भी,
अपने तुच्छ जीवन की,
परवाह ना करके,

निष्काम–निर्विकार भाव से,
जीवनपर्यंत,
निरंतर कर्म करता हुआ,
सबका खून चूस रहा है।

देवव्रत शर्मा, उप महाप्रबंधक (सेवाएं)
एनसीआर कार्यालय, कौशांबी

कविता

उलझन

मटमैले कागज के,
आड़े–तिरछे फटे हुए सफहों पर,
बिखरी जिंदगी की कुछ सुनी हुई,
कुछ अनकही दास्तान को उसके अनजाने,
गंतव्य की तरफ धकेलती विचित्र सी परिस्थितियाँ,
उनको अपने काबू में कर पाने की निरर्थक,
लालसा रूपी अनबुझी प्यास,
दम तोड़ती उम्मीद–ओ–आस,
वो झिलमिलाती हल्की सी लौ,
बुझ ही जाए तो क्या है ?

तपते सुलगते रेगिस्तान में,
धूल भरी आँधियों का,
सीना चीर कर अपनी मंजिल की तरफ,
निरंतर बढ़ते प्यासे कारवाँ,
मरुस्थल के अंतःस्थल को चीरकर
मीठी जलधार बहाने का भगीरथ प्रयास
किसी का क्या कभी सफल हुआ है ?
यदि मुसाफिरों के अनंत सफर पर प्रस्थान,
के पश्चात प्रयास सफल,
हो भी गया तो क्या है ?

अस्तांचल के सन्निकट,
निर्बाध गति से अग्रसारित जीवन,
असहय अनंत पीड़ा सहन करता अंतर्मन,
व्यथित हृदय की खामोश चीत्कार और विदीर्ण तन,
स्याह घेरों से घिरी बरसों बरस से बिना पलकें,
झपकाए जाग रही थकी–थकी चितवन,
कातर नेत्रों से लावे की तरह,
अविरल बहती अश्रुधार,
यदि अंततः उद्‌गम स्थल,
मिल भी जाए तो क्या है?

देवव्रत शर्मा, उप महाप्रबंधक (सेवाएं)
एनसीआर कार्यालय, कौशांबी

कविता

एक जीव की लाजवाब पंक्तियां

तन्हा बैठा था एक दिन मैं अपने मकान में,
चिड़िया बना रही थी घोंसला रोशन दान में।

पल भर में आती पल भर में जाती थी वो,
छोटे–छोटे तिनके चोंच में भर लाती थी वो।

कुछ दिन बाद.....

मौसम बदला, हवा के झोंके आने लगे,
नन्हें से दो बच्चे घोंसले में चहचहाने लगे।

पाल रही थी चिड़िया उन्हें,
पंख निकल रहे थे दोनों के,
पैरों पर करती थी खड़ा उन्हें !

देखता था मैं हर रोज उन्हें,
जज्बात मेरे उनसे कुछ जुड़ गए,
पंख निकलने पर दोनों बच्चे,
मां को छोड़ अकेले उड़ गए।

चिड़िया से पूछा मैंने...
तेरे बच्चे तुझे अकेला क्यों छोड़ गए,
तू तो थी मां उनकी,
फिर ये रिश्ता क्यों तोड़ गए।

चिड़िया बोली...

परिन्दे और इंसान के बच्चे में यही तो फर्क है,
इंसान का बच्चा.....
पैदा होते ही अपना हक जमाता है,
न मिलने पर वो मां–बाप को,
कोर्ट कचहरी तक भी ले जाता है।

मैंने बच्चों को जन्म दिया,
पर करता कोई मुझे याद नहीं,
मेरे बच्चे क्यों रहेंगे साथ मेरे,
क्योंकि मेरी कोई जायदाद नहीं।

सुरेश कुमार
वरि. टैक्नीशियन, ऋषिकेश

हम जिसकी पूजा करते हैं उसी के समान हो जाते है – **महात्मा गांधी**

मां भारती

कविता

मां भारती मां भारती, वरदान दो मां भारती
संजय को जो उपहार दी, वही दृष्टि दो मां भारती
सीमा जो लांघे काल की, चुनके कथा हर साल की
बीते प्रति लव लेश को, हासिल करे जो शेष को
लेकर जिसे मैं जा सकूं, उस दृश्य को मैं पा सकूं
भारत विजय जिन पर लिखी, उन भाल की करूं आरती
मां भारती मां भारती, वरदान दो मां भारती।

बूंदें लहू की घावों से, रण में जो भूमि पर गिरी
अनंत गाथा वीरता की, घेरे ना जिनमें घिरी
अभिलाषा कि दर्शन करूं, भैरव छवि जिनमें भरी
पाषाण वे जिन पर पड़े, निशान अंगद वीरों के
स्पर्श जिनका पाने को, धारा बहें सब वारती
मां भारती मां भारती, वरदान दो मां भारती।

धरूं शीश पर शिव रूप सम, अभिषेक शोणित नीरों के
करता फिरूं मस्तक को नत, हर धाम घातक वीरों के
मंदिर जहां के गर्भ में, शक्ति प्रचंड को पालती
आभार में कृतकृत्य हो, वही शीष दो मां भारती
मां भारती मां भारती, वरदान दो मां भारती।

गलवान की गाथा मैं देखूं, देखूं कथा बलवान की
है वीरता पूंजी जहां, करूं पूजा उन धनवान की
साक्षी बनूं उस दृश्य का, जिसे वीरों ने पहचान दी
गूंजी जहां बिरसा की जय, जहां गूंजी जय हनुमान की
संतोष जय का पाने तक, युवावस्था मृत्यु टालती
मां भारती मां भारती, वरदान दो मां भारती।

गहराई क्या ऊंचाई क्या, लंबाई क्या चौड़ाई क्या
गरमाई क्या शीताई क्या, आसान क्या कठिनाई क्या
ये कौन हैं, हैं नाम क्या, जो अवस्था ये नहीं जानती
दिक शत्रु में विध्वंस करना, आदेश जिसको मानती
कोटि नमन उन वीरता को, शत्रु को जो अहारती
मां भारती मां भारती, वरदान दो मां भारती।

शत्रु ग्रीवा तोड़–तोड़, मृत्यु की बांह मोड़–मोड़
मलिनारि से युद्ध मल्ल में, घट शत्रु मद को फोड़–फोड़
काल के भी काल होने, काल से करें होड़–होड़
जिन वीरभद्रों को देख शत्रु, भागे रण को छोड़–छोड़
ऐसे प्रचंड सहस्रबाहु से, करो राष्ट्र मुकुलित आरती
मां भारती मां भारती, वरदान दो मां भारती।

सिद्धार्थ कौशिक
उप प्रबंधक, कोटेश्वर

योग से निरोग एक प्रयोग

कविता

सृष्टि के प्रथम महायोगी का आओ हम सब ध्यान करें,
ऋषि पतंजलि योग गुरु के श्री चरणों में प्रणाम करें।
वेद, ऋचाओं, स्मृति सिद्धियों को समझें, जीवन का कल्याण करें,
हृष्ट-पुष्ट बलिष्ठ मन काया हो, आओ नित योग का ध्यान करें।
सांसों के प्रवाह पर नियंत्रण, अलौकिक स्फूर्ति का भान करें,
सृष्टि के प्रथम महायोगी का आओ हम सब ध्यान करें।

नित योग करें, स्वस्थ निरोग बने, यह संदेश फैलाना है,
अंतर्मन की दिव्य शक्ति को, योग क्रियाओं से जगाना है।
रोग मुक्त बन शक्ति युक्त बन, योग जीवन के लिए अमृत खजाना है,
जीवन है अनमोल धरोहर, रोग, दोष, विकार से इसे बचाना है।
मन तन के रोग अवसाद क्लेश, अहम को दूर भगाना है,
मां भारती के कर्मयोगियों जागो, सभ्य संस्कृति की पहचान करें।
सृष्टि के प्रथम महायोगी का आओ हम सब ध्यान करें।

नित भोर में उठकर, निवृत होकर, कपालभाती प्राणायाम करें,
भ्रामरी, भष्त्रिका, शुचि अनुलोम विलोम, योगासन और ध्यान करें।
सहस्त्र लाभप्रद योगसूत्र है, तन मन मस्तिष्क,
आत्मा की शुद्धि साफ करें,
सुर देव गंधर्व दानव असुर, तप योग और समाधि ध्यान करें,
सांसों के प्रवाह पर नियंत्रण, इंद्रियों की शक्ति का भान करें।
सृष्टि के प्रथम महायोगी का आओ हम सब ध्यान करें।

कर्मशुकुशल, गीता में श्री कृष्ण ने दिव्य वरदान दिया।
सद्गुरु, ज्ञानी, संत, महंत ने जग को योग भक्ति का ज्ञान दिया।
योगानुशाहनम, योगचितवृतिः, निरोग का दिव्य दर्शन दिया।
समाधि, साधना, विभूति, कैवल्य का योगऋषि ने ज्ञान दिया।
चित वृत्तियों क्षिप्त, विक्षिप्त, मूढ, क्लेश, द्वेष जिज्ञासा को शांत किया।
योग करें और योग को समझें, हर रोग, चिंता का समाधान करें।
सृष्टि के प्रथम महायोगी का आओ हम सब ध्यान करें।

देवभूमि यह तपोभूमि, ऋषिकेश, हरिद्वार को विश्व योग से जाना है।
योगासन है शरीर विज्ञान क्रिया, जीवन में सबको अपनाना है।
यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार,
धारणा से ध्यान समाधि तक जाना है।
अंतर्मन के अंतर्द्वंद से ध्यान समाधि से मोक्ष को पाना है।

ऋषि तपस्वी के महाज्ञान की औषधि का सोपान करें।
सृष्टि के प्रथम महायोगी का आओ हम सब ध्यान करें ।

योग साधना से शिव भोले ने हिम शिखरों पर तप किया।
ब्रह्म कमंडल से उतरी गंगा, राजा भगीरथ ने घनघोर तप किया।
मां गंगा की प्रलय जलधारा को जटाओं में अपनी थाम लिया।
अभिशप्त वंश का उद्धार, जग कल्याण,
हठयोग तप से गंगाजी को मना लिया।
पतित पावनी मोक्षदायिनी में स्नान आचमन,
पावन तट पर योग तप ध्यान करें।
सृष्टि के प्रथम महायोगी का आओ हम सब ध्यान करें।

ऋषि मुनियों की तप महाविद्या,
योगा का आपस मे आदान प्रदान करें।
विषाणु कोरोना से बचना है,
आयुष औषध काढा का नित्य सोपान करें।
योग दिवस पर देव संस्कृति, योग शिक्षा का ज्ञान बखान करें।
ऋषियों की संतानों जागो, योग और योगसूत्र की पहचान करें।
योग दिवस पर, ऋषि मुनियों के योग तप का आह्वान करें।
सृष्टि के प्रथम महायोगी का आओ हम सब ध्यान करें।

पुरूषोत्तम सिंह रावत
वरि. सुरक्षा अधिकारी, कोटेश्वर

आँख के बदले में आँख पूरे विश्व को अँधा बना देगी – **महात्मा गांधी**

कविता

एक किताब है जिंदगी

बनते बिगड़ते हालातों का
हिसाब है जिन्दगी।

हर रोज एक नया पन्ना जुड़ता है जिसमें
वो ही एक किताब है जिन्दगी।

हर पल एक नया किरदार,
तैयार रहता है अपना अंत पाने को।

गमों के दौर में खुशियों की,
राह ताकते हैं कई लोग।

तड़पते हैं पेड़ और पंछी पतझड़ में,
जैसे बसंत पाने को।

कभी कड़ी धूप सी परेशानियां,
जलती रहती है दर्द की एक आग जीवन में।

कभी खुशियों में आनंद मिलता है तो,
खुशबू आती है पसीने में।

मजबूरियों का सिलसिला,
चलता रहता है सबकी राहों में।

बदल देते हैं वो शख्स कायनात अपनी,
होती है जान हौंसलों की जिनकी बांहों में।

कहने को वो हिसाब है जिन्दगी,
हर रोज एक नया पन्ना जुड़ता है जिसमें,
वो ही एक किताब है जिन्दगी।

किरन डबराल
प्रशिक्षु (ड्राफ्ट्समैन सिविल), टिहरी

कविता

वक्त

धार वक्त की बड़ी प्रबल होती है,
इसमें लय से बहा करो।

जीवन कितना क्षण भंगुर है,
मिलते जुलते रहा करो।

यादों की भरपूर पोटली,
क्षणभर में न बिखर जाए।

यारों से अनकही कहानी,
तुम भी थोड़ी कहा करो।

हंसते चेहरों के पीछे भी,
दर्द भरा हो सकता है।

यही सोच मन में रख करके,
हाथ–हाथ में लिया करो।

सबके अपने–अपने दुःख हैं,
अपनी–अपनी पीड़ा है।

अपने दोस्तों के संग थोड़े दुःख,
मिलजुल कर सहा करो।

किसका साथ कहां तक होगा,
कौन भला कह सकता है।

मिलते कहने के नये बहाने,
रचते बुनते रहा करो।

मिलने जुलने से कुछ यादें,
फिर ताजा हो उठती हैं।

इसलिए मित्रों से यूं ही,
मिलते जुलते रहा करो।

वी.एल. रतूड़ी
उप अधिकारी, कोटेश्वर

कविता

कुछ पल

हां, मैं एक लड़की हूँ जो घूमने और खाने का
बहुत शौक रखती है।
हां, मैं वही हूँ जिसके बहुत सारे दोस्त हैं।
लड़कियां और लड़के भी,

अरे।।

क्या हो गया, क्या मतलब कि
लड़कों से दोस्ती मत करो।
क्या मतलब कि ज्यादा मत घूमा करो
क्या मतलब कि मेरी जिंदगी
मैं अपनी मर्जी से नहीं जी सकती
क्यों मैं हर किसी से डरूं।

हर किसी को सफाई देती फिरूं,
अगर मैं जमाने के साथ चल रही हूँ
तो क्या मतलब कि झुक कर रहो।
क्या मतलब कि खुद को कमतर आंको,
क्यों, क्योंकि ये पुरूष प्रधान समाज है।

परंतु मुझमें भी तो जान है
मेरे भी कुछ अरमान हैं,
क्यों मेरे अरमान कुचल रहे हो।
हां मैं लड़की हूँ पर लड़कों से कम नहीं हूँ
भरोसा करके तो देखो
आसमां से ऊंची उड़ान है मेरी।
पंख खोलने का अवसर तो दो,
एक बहन, बेटी, पत्नी और मां,
मैं सारे कर्तव्य वैसे ही निभाऊंगी।
पर इस जिंदगी के कुछ पल
अपनी मर्जी से जीना चाहूँगी।
बोलो दे पाओगे मुझे इतनी छूट,
ढूंढने दोगे मुझे अपना वजूद।।

इशिता नेगी
प्रशिक्षु (का. एवं प्रशा.), टिहरी

कविता

हँसी

हँसना एक प्राकृतिक व्यवहार है परंतु,
किसी को हँसाना एक कला है,
हर गम में खुशियां तलाशना एक कला है,
इस कला का कायल तो हर कोई है,
पर हर कोई इसे पा न सका,
छोटे से इस जीवन में ना जाने,
कौन कितना बोझ लेकर चला है।

किसके मन की कौन जान सका है,
सब मस्त हैं अपने में ही,
दूसरों की किसी को कहां कुछ खबर है,
दुख सभी को है यहां,
पर कोई समझ पाए ऐसा सबके पास नहीं,
कोई भूखा रहकर भी ईश्वर को याद कर लेता है,
और कोई भरपेट खाने पर भी संतुष्ट नहीं,
सभी डूबे किसी चिंता में हैं परंतु,
किसी का अर्थ है तो कुछ यूं ही व्यर्थ हैं,
कोई स्वयं से परेशान है,
कोई अपनी तकदीर से,
कोई मांग कर भी दान कर देता है,
कोई इतना होकर भी नहीं दान कर पा रहा है,
ये जिंदगी है साहब यहां सबका अपना रोना है,
सबका अपना दुख है,
हर किसी के लिए अपना दुख दुख है,
दूसरे का दुख व्यर्थ है,
सामने कुछ और पीठ पीछे सबके अलग चेहरे हैं,
किसी के सुख में दुखी एवं दुख में खुश होते हैं,
व्यक्तित्व में बदलाव हो चला है और,
भरोसा सिर्फ खुद पर रह गया है,
बदल चुकी है दुनिया बदल चुकी है
लोगों की सोच,
बात कड़वी है परंतु सत्य है,
मिले खुद से फुरसत तो सोचना ज़रूर।।

इशिता नेगी
प्रशिक्षु (का. एवं प्रशा.), टिहरी

कविता

कोरोना की महामारी

एक अनदेखे विषाणु ने तोड़ दी इंसानियत, रिश्तों की डोर।
चारों ओर फैला है सन्नाटा दहशत मचा रही है शोर।

देख रहा कोई समाचार कोई पढ़ रहा है अखबार,
कोरोना के कहर से ठप हो गया कारोबार।

सुनसान पड़ गई गलियां सड़कें और शहर,
प्राणवायु की शीतलता में घुल गया यह कैसा जहर।

वह जो शहरों के हो चुके थे लौट आए अपने घर द्वार,
बूढ़े मां बाप के संग पूरा हो गया उनका परिवार।

चाहरदीवारी की छत ही लगती है अब आसमान,
पिंजरे में कैद पंछी सा लगता है अब इंसान।

पशु, पक्षी स्वतंत्र खुली हवा में लेते है सांस,
नदी, हवा, पर्यावरण, प्रकृति हो गयी स्वच्छ और साफ।

पशु, पक्षी अब स्वतंत्र है उनकी हर गलती है माफ,
मानव तू है कैदगाह में, ठंडी आह में मानव को लगा श्राप।

प्रकृति का दोहन,
इसानियत का खोखलापन देख रहा समाज,
लालच लोभी मृत्यु शैया पर कराह रहा बेआवाज।

राजपाल आर्य
सहायक टंकक, कोटेश्वर

कविता

पहाड़ियों की बात

पहाड़ी समाज की कुछ निराली बात होती है,
पशुओं की सेवा से ही उनकी शुरू प्रभात होती है,
एक घूंट चाय और खेतों में उनकी रात होती है।

बर्गर, पिज्जा, चाऊमीन तो,
शहरियों का खाना है,
पहाड़ियों को तो, खाना खाया तब लगता है,
जब खाने में मंडवे की रोटी,
झंगोरा और दाल–भात होता है।

बहुत भोले होते हैं हम पहाड़ी लोग,
सबकी मदद करना, अपना धर्म समझते हैं,
नही ज्यादा चाहिए, हम पहाड़ियों को दौलत,
शोहरत, बंगला, गाड़ी, कोठी आलीशान नहीं चाहिए।

पहाड़ियों को तो अपना घर द्वार ही प्यारा होता है,
पठाली के तिकोने घरों में रहते हैं हम शान से।

राजपाल आर्य
सहायक टंकक, कोटेश्वर

राजभाषा गतिविधियां एवं आयोजित कार्यक्रम

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 14 सितंबर से 29 सितंबर, 2020 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार कोविड – 19 को दृष्टिगत रखते हुए हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित किए जाने वाले सभी कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताएं ऑन–लाइन साधनों जैसे ई–मेल, ई–ऑफिस एवं वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित किए गए।

हिंदी दिवस समारोह, हिंदी पखवाड़ा उद्घाटन एवं नोडल अधिकारियों की बैठक

दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन करते अपर महाप्रबंधक (का.–प्रशा.), श्री एन.के.प्रसाद, उप महाप्रबंधक (का.–स्था./हिंदी), श्री ईश्वरदत्त तिग्गा एवं अन्य अधिकारी/कर्मचारी

हिंदी दिवस समारोह में संचालन कक्ष में उपस्थित अधिकारीगण एवं बैठक से ऑनलाइन जुड़े हिंदी नोडल अधिकारी

हिंदी पखवाड़ा का शुभारंभ 14 सितंबर को हिंदी दिवस समारोह के साथ किया गया। इस दिन कारपोरेट कार्यालय के विभिन्न विभागों में नामोर्निदिष्ट किए गए हिंदी नोडल अधिकारियों की ऑन–लाइन बैठक आयोजित की गई। संचालन कक्ष में कार्यक्रम के अध्यक्ष, अपर महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन), श्री एन. के. प्रसाद, उप महाप्रबंधक (कार्मिक–स्थापना/हिंदी), श्री ईश्वरदत्त तिग्गा, श्री पंकज कुमार शर्मा, वरि. हिंदी अधिकारी एवं अन्य अधिकारियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

समारोह में माननीय केंद्रीय गृहमंत्री, श्री अमित शाह, माननीय नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री आर. के. सिंह, निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री डी.वी. सिंह के द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर जारी की गई अपील सभी उपस्थित प्रतिभागियों को पढ़कर सुनाई गई। उक्त अपील टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मध्य ई–मेल एवं टीएचडीसी फैमिली ग्रुप पर परिचालित की गई तथा इसके साथ

आर्थिक मुद्दे हमारे लिए सबसे जरूरी हैं और यह महत्त्वपूर्ण है
कि हम अपने सबसे बड़े दुश्मन गरीबी और बेरोजगारी से लड़ें – **लाल बहादुर शास्त्री**

ही टीएचडीसी के फेसबुक पेज पर भी अपलोड की गई। निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री डी.वी. सिंह के द्वारा अपनी अपील में निगम के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से यह संकल्प लेने का अनुरोध किया गया था कि सभी अधिकारी एवं कर्मचारी राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने का सतत प्रयास करें तथा अपने–अपने कार्यालयीन कार्य में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाते हुए राजभाषा कार्यान्वयन में अपनी ओर से गति प्रदान करें।

कार्यक्रम में श्री पंकज कुमार शर्मा, वरि. हिंदी अधिकारी ने कारपोरेट कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों एवं गतिविधियों के बारे में हिंदी नोडल अधिकारियों को विस्तार से जानकारी दी तथा इसके साथ ही इस संदर्भ में पूर्व में परिचालित किए गए परिपत्रों में हिंदी नोडल अधिकारियों की शंकाओं का समाधान भी किया। इस अवसर पर कारपोरेट कार्यालय के विभिन्न विभागों/अनुभागों से प्राप्त हुई हिंदी की तिमाही प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा की गई तथा सभी नोडल अधिकारियों से अनुरोध किया गया कि हिंदी पत्राचार के प्रतिशत को बढ़ाने का भरसक प्रयास करें।

हिंदी दिवस के अवसर पर अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मध्य निगम के कम्प्यूटरों के डेस्कटॉप पर लगाने हेतु हिंदी दिवस से संबंधित वॉलपेपर ई–मेल के माध्यम से परिचालित किए गए। जिसे अधिकारियों एवं कर्मचारियों के द्वारा अपने–अपने कम्प्यूटरों के डेस्कटॉप पर लगाया गया।

हिंदी दिवस पर कम्प्यूटरों पर लगाए गए वॉलपेपर

हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन

हिंदी पखवाड़ा के दौरान कारपोरेट कार्यालय के कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसी क्रम में 16 सितंबर को हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका विषय ''कोविड–19 महामारी – चुनौती को अवसर में बदलने का सही समय'' रखा गया था। 18 सितंबर को नोटिंग–ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता, 21 सितंबर को अनुवाद प्रतियोगिता, 22 सितंबर को कार्यपालकों एवं गैर कार्यपालकों के लिए अलग–अलग हिंदी ई–मेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 23 सितंबर को हिंदी कविता लेखन प्रतियोगिता तथा 24 सितंबर को नराकास हरिद्वार के सदस्य संस्थानों के कर्मचारियों के लिए राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन एवं हिंदी पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कारों की घोषणा

हिंदी पखवाड़ा का समापन एवं पुरस्कारों की घोषणा 29 सितंबर, 2020 को कारपोरेट कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वायन समिति की बैठक में की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री विजय गोयल, निदेशक (कार्मिक) ने की। इस अवसर पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य, हिंदी नोडल अधिकारी तथा सभी पुरस्कार विजेता वीडियो

कांफ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े हुए थे। कार्यक्रम के संचालन कक्ष में श्री आई.डी. तिग्गा, उप महाप्रबंधक (कार्मिक–स्थापना/हिंदी) तथा हिंदी अनुभाग के अधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम के शुभारंभ पर वरि. हिंदी अधिकारी, श्री पंकज कुमार शर्मा ने राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष, श्री विजय गोयल एवं समस्त उपस्थित विभागाध्यक्षों/अनुभागाध्यक्षों एवं प्रतियोगिताओं के प्रतिभागी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। सर्वप्रथम अध्यक्ष महोदय की अनुमति से राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की कार्यवाही प्रारंभ की गई जिसके अंतर्गत 30 जून को समाप्त तिमाही प्रगति रिपोर्ट के आधार पर प्रस्तुतीकरण के माध्यम से विभागों/अनुभागों में हिंदी की प्रगति की समीक्षा की गई। कार्यक्रम में हिंदी गृह पत्रिका ''पहल'' के 25वें अंक का ई–विमोचन भी किया गया। इसके बाद हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित कार्यक्रमों का पूरा ब्यौरा प्रस्तुत किया गया तथा पुरस्कारों की घोषणा की गई।

दिनांक 16.09.2020 को आयोजित हुई हिंदी निबंध प्रतियोगिता में श्री हरीश चन्द्र उपाध्याय, वरि. प्रबंधक (भूगर्भ एवं भू–तक.) – प्रथम, श्री दिलीप कुमार द्विवेदी, प्रबंधक (कार्मिक–कल्याण)–द्वितीय, श्री पंकज विश्वकर्मा, उप प्रबंधक (भूगर्भ एवं भू–तक.) – तृतीय रहे। साथ ही श्रीमती रूचि हांडा, वरि. अभियंता (वाणिज्यिक) एवं श्रीमती अलका रावत, उप अधिकारी (सतर्कता) ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

निदेशक (कार्मिक), श्री विजय गोयल की अध्यक्षता में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के ऑनलाइन आयोजन में संचालन कक्ष में उप महाप्रबंधक (कार्मिक–स्थापना/हिंदी), श्री ईश्वरदत्त तिग्गा की उपस्थिति में बैठक का संचालन करते श्री पंकज कुमार शर्मा, वरि. हिंदी अधिकारी

दिनांक 18.09.2020 को आयोजित हुई नोटिंग–ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता में श्री शिवराज चौहान, वरि. प्रबंधक (अ. एवं प्र. नि. सचिवालय)– प्रथम, श्री आशुतोष कुमार आनंद, प्रबंधक (कार्मिक–नीति) – द्वितीय, श्री सी. एल. पठोई, उप प्रबंधक (का. एवं प्रशा.) – तृतीय रहे। साथ ही श्री चन्द्रदेव प्रसाद, वरि. अभियंता (आईटी) एवं श्री दिलीप कुमार द्विवेदी, प्रबंधक (कार्मिक–कल्याण) ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

दिनांक 21.09.2020 को आयोजित हुई अनुवाद प्रतियोगिता में श्री संजय रावत, प्रबंधक (परि.–सिविल एच.एम.) – प्रथम, श्रीमती पारूल अग्रवाल, उप प्रबंधक (वित्त–बजट) – द्वितीय, श्री जी.एस. चौहान, वरि. प्रबंधक (लागत अभियांत्रिकी) – तृतीय रहे। साथ ही श्री ए.वी. नारायणन, उप महाप्रबंधक (संविदा) एवं सुश्री विशाखा मीना, वरि. अभियंता (परिकल्प –सिविल) ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

दिनांक 22.09.2020 को कार्यपालकों के लिए आयोजित हुई हिंदी ई–मेल प्रतियोगिता में श्री अजय कुमार, वरि. प्रबंधक (भूगर्भ एवं भू–तक.) – प्रथम, श्री गोविन्द सिंह रावत, उप प्रबंधक (कार्मिक–नीति) – द्वितीय, श्री नीलेश कुमार नेमा, प्रबंधक (वित्त – सह. प्रकोष्ठ) – तृतीय रहे। साथ ही श्री विनय कुमार जैन, उप महाप्रबंधक (विधि एवं माध्य.) एवं श्री रितेश शर्मा, वरि. अभियंता (ओ.एम.एस.) ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

विश्वास को हमेशा तर्क से तौलना चाहिए, जब विश्वास अँधा हो जाता है तो मर जाता है – **महात्मा गांधी**

दिनांक 22.09.2020 को ही गैर – कार्यपालकों के लिए आयोजित हुई हिंदी ई–मेल प्रतियोगिता में श्री खीम सिंह बिष्ट, वरि. सहायक (कार्मिक – नीति) – प्रथम, श्री गंभीर गुनसोला, प्रारूपकार (परिकल्प–सिविल) – द्वितीय, श्री बीर सिंह रावत, उप अधिकारी (संविदा) – तृतीय रहे। साथ ही श्रीमती शीला देवी, उप अधिकारी (ओ.एम.एस.) एवं श्री गबर सिंह बागड़ी, सहायक (ओ.एम.एस.) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

दिनांक 23.09.2020 को आयोजित हुई हिंदी कविता प्रतियोगिता में श्री एस.के. चौहान, उप महाप्रबंधक (परिकल्प–सिविल) – प्रथम, श्री के.सी. उनियाल, वरि. प्रबंधक (भूगर्भ एवं भू–तक.) – द्वितीय, श्री मनोहर लाल डोभाल, वरि. कार्य. सचिव (विधि एवं माध्य.) – तृतीय रहे। साथ ही श्री अश्विनी आनंद, वरि. अभियंता (एम.पी.एस.) एवं श्री नरेश कुमार गुप्ता, उप प्रबंधक (मुख्य अभिलेख कार्यालय) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

दिनांक 24.09.2020 को टीएचडीसी इंडिया लि. के कारपोरेट कार्यालय एवं नराकास हरिद्वार के सदस्य संस्थानों के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित हुई राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता में श्री संजीव कुमार, पीजीटी (हिंदी), केंद्रीय विद्यालय, नं.–1, रुड़की – प्रथम, श्री प्रमोद नौटियाल, अपर अभियंता, बीएचईएल, हरिद्वार – द्वितीय, सुश्री अंजु चौधरी, पी. आर.ए., एन.आई.एच., रुड़की – तृतीय रहे। साथ ही श्री चन्द्र देव प्रसाद, वरि. अभियंता (आई.टी.), टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड एवं श्री विजय विकास पुरी, मुख्य प्रबंधक, पावर ग्रिड कारपोरेशन, रुड़की ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

2019–20 के दौरान विभागाध्यक्षों/अनुभागाध्यक्षों द्वारा हिंदी में सर्वाधिक कामकाज के अन्तर्गत पुरस्कार योजना के तहत श्री एन.के. प्रसाद, अपर महाप्रबंधक (का.एवं प्रशा.) – प्रथम, डॉ. अमर नाथ त्रिपाठी, उप महाप्रबंधक (कार्मिक नीति/केंद्रीय संचार) – द्वितीय एवं श्री यू.बी. सिंह, उप महाप्रबंधक (औद्योगिक अभियांत्रिकी) – तृतीय रहे।

हिंदी में सर्वाधिक डिक्टेशन देने वाले विभागाध्यक्षों में श्री मुहर मणि, कार्यपालक निदेशक (ओएमएसक्यूए एवं सेफ्टी) – प्रथम (हिंदी भाषी) तथा श्री ईश्वरदत्त तिग्गा, उप महाप्रबंधक (कार्मिक–स्थापना/हिंदी) – द्वितीय (हिंदी भाषी) ने पुरस्कार प्राप्त किया।

मूलरूप से हिंदी में सर्वाधिक टिप्पण एवं आलेखन करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों में श्री सचिन मित्तल, प्रबंधक (कारपोरेट नियोजन) एवं श्री आशुतोष कुमार आनंद, प्रबंधक (कार्मिक–नीति) – प्रथम (02), श्री जे.एल. भारती, जनसंपर्क अधिकारी (केंद्रीय संचार), श्री आनंद कुमार अग्रवाल, वरि. प्रबंधक (कार्मिक–प्रशासन) एवं श्री रविन्द्र सिंह तोपवाल, वरि. कार्मिक अधिकारी (कार्मिक–आईआर) – द्वितीय (03), श्री शिव प्रसाद व्यास, कार्यपालक सचिव (कार्मिक–स्थापना), श्री नेकी राम, वरि. कार्य. सचिव (मा.सं.वि.), श्रीमती नेहा सिसिंगी, उप प्रबंधक (कार्मिक–नीति), श्री जी.एस. रावत, उप प्रबंधक (कार्मिक–नीति) एवं श्री विशाल शारिया, प्रबंधक (औद्यो. अभि.) ने तृतीय (05) पुरस्कार प्राप्त किया।

विभागों में हिंदी का कार्यान्वयन देख रहे हिंदी नोडल अधिकारियों को भी उनके सराहनीय योगदान हेतु पुरस्कृत किया गया। जिन विभागों के हिंदी नोडल अधिकारियों ने वर्ष के दौरान सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया है उनका चयन पुरस्कार हेतु किया गया। इस योजनांतर्गत श्री नटराजन कृष्णा, उप महाप्रबंधक (परिकल्प–सिविल), श्री वी. पी. माथुर, वरि. प्रबंधक (वित्त–बजट), श्री पीयूष चन्द्र रतूड़ी, वरि. प्रबंधक (कारपो. नियो.), श्री योगेश कुमार शर्मा, वरि. प्रबंधक (एम.पी.एस.), श्री एच.सी. उपाध्याय, वरि. प्रबंधक (भू–विज्ञान एवं भू–तकनीकी), श्री बी.पी. डोभाल, उप प्रबंधक (मुख्य अभिलेख कार्यालय), श्री नेकी राम, वरि. कार्यपालक सचिव (मा.सं.वि.), श्री गोविन्द सिंह रावत, उप प्रबंधक (कार्मिक–नीति), श्री ललित जोशी, उप प्रबंधक (कंपनी सचिवालय) एवं श्री रघुवीर सिंह नेगी, उप प्रबंधक (कार्मिक–प्रशा.) को पुरस्कृत किया गया।

टीएचडीसी की हिंदी गृह पत्रिका ''पहल'' के वर्ष 2019–20 में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए श्री संदीप सिंघल, महाप्रबंधक (संविदा), ऋषिकेश को उनके लेख ''बचपन की चुलबुली यादें'', श्री एस. के. चौहान, उप महाप्रबंधक (परिकल्प–सिविल) को ''आईआईटी का सपना एक बोझ'', श्री आशुतोष कुमार आनंद, प्रबंधक (कार्मिक–नीति) को उनके लेख ''सोचकर दिया तो व्यर्थ दिया'', श्री आर. पी. रतूड़ी, वरि. प्रबंधक, खुर्जा को उनके लेख ''मत ध्यारो म्हारे देश'' एवं सुश्री विशालाक्षी मालान, उप प्रबंधक, कौशांबी को उनके लेख ''डिजिटल इंडिया'' के लिए पुरस्कृत किया गया।

हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले मानव संसाधन विभाग को 2019–20 के लिए अंतर विभागीय चल राजभाषा ट्राफी प्रदान की गई तथा केन्द्रीय संचार विभाग को उत्तरोत्तर प्रगतिगामी चल राजभाषा ट्रॉफी प्रदान की गई। संचालन कक्ष में उपस्थित श्री ईश्वरदत्त तिग्गा, उप महाप्रबंधक (कार्मिक–स्थापना/हिंदी) ने निदेशक(कार्मिक) महोदय की ओर से ट्राफी के विजेता विभागों के प्रतिनिधियों को ट्राफी प्रदान की।

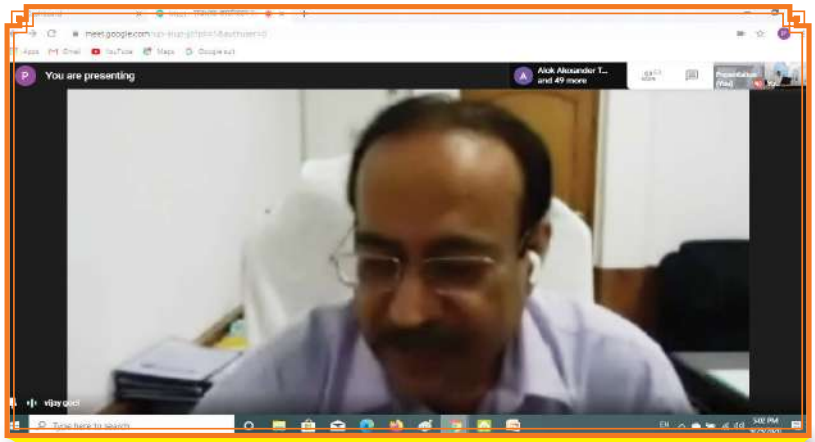

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक एवं हिंदी पखवाड़ा के प्रतिभागियों को संबोधित करते निदेशक (कार्मिक), श्री विजय गोयल

हिंदी पखवाड़ा के समापन अवसर पर निदेशक (कार्मिक), श्री विजय गोयल ने अपने संबोधन में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित हुई प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं एवं प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत विजेता रहे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देते हुए कहा कि कोविड–19 संक्रमण की वर्तमान परिस्थितियों में हिंदी पखवाड़ा के दौरान उक्त आयोजन पूर्ण रूप से ऑनलाइन/एसओपी के माध्यम से कराया गया जिसके लिए सभी यूनिटों/कार्यालयों के हिंदी अनुभाग बधाई के पात्र हैं। इसके साथ ही उन्होंने इस कार्यक्रम में बढ़–चढ़ कर प्रतिभागिता करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों की भी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि 24 सितंबर, 2020 को नराकास हरिद्वार के सदस्य संस्थानों के लिए आयोजित हुई राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में 168 कर्मचारियों के द्वारा प्रतिभागिता करना वास्तव में चुनौती को अवसर में बदलने का एक उदाहरण है। आजकल कम्प्यूटरों में हिंदी में कार्य करना कितना आसान हो गया है इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अनेक अधिकारी जो हिंदी की टाइपिंग नहीं जानते, वे विभिन्न टूल्स के माध्यम से हिंदी ई–मेल प्रतियोगिता में बड़ी संख्या में प्रतिभागिता कर रहे हैं। इन टूल्स का उपयोग करते हुए निगम के अधिकारी सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में करते हुए वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को पूरा करने का अपनी ओर से पूर्ण प्रयास करें।

कार्यक्रम के अंत में वरि. हिंदी अधिकारी, श्री पंकज कुमार शर्मा ने ऑनलाईन माध्यम से जुड़े निदेशक (कार्मिक), सभी विभागाध्यक्षों/अनुभागाध्यक्षों एवं हिंदी पखवाड़ा के प्रतिभागियों तथा कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले विभागों एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया।

पाप से घृणा करो, पापी से प्रेम करो – **महात्मा गांधी**

यूनिट कार्यालय, टिहरी

यूनिट कार्यालय, टिहरी में 14 सितंबर से 28 सितंबर, 2020 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। हिंदी पखवाड़ा के उद्घाटन समारोह का शुभारंभ कार्यपालक निदेशक (टीसी), श्री वी.के. बड़ोनी, महाप्रबंधक (पीएसपी), श्री के.पी. सिंह, महाप्रबंधक (ईएम,एचएम), श्री एस.एस.पंवार, महाप्रबंधक (स्टेज–1), श्री सी.पी.सिंह, उप महाप्रबंधक (का.एवं प्रशा.), श्री बी.के. सिंह एवं प्रबंधक (हिंदी), श्री इन्द्र राम नेगी द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन करते कार्यपालक निदेशक (टीसी), श्री वी.के. बड़ोनी, महाप्रबंधक (पीएसपी), श्री के.पी. सिंह, महाप्रबंधक (ईएम,एचएम), श्री एस.एस.पंवार, महाप्रबंधक (स्टेज–1), श्री सी.पी. सिंह, उप महाप्रबंधक (का. एवं प्रशा.), श्री बी.के. सिंह एवं प्रबंधक (हिंदी), श्री इन्द्र राम नेगी

सर्वप्रथम कार्यक्रम का संचालन कर रही कनिष्ठ अधिकारी (हिंदी), श्रीमती नीरज सिंह ने मुख्य अतिथि एवं उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों का स्वागत किया और हिंदी पखवाड़ा के आयोजन पर प्रकाश डालते हुए अवगत कराया गया कि 14 सितंबर से 28 सितंबर, 2020 तक आयोजित किए जाने वाले हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे निबंध, नोटिंग–ड्राफ्टिंग, हिंदी टंकण, हिंदी सुलेख, अनुवाद, वाद–विवाद एवं हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा।

इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक (टीसी), श्री वी.के. बड़ोनी ने माननीय नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री आर.के. सिंह एवं निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री डी.वी. सिंह की हिंदी दिवस के अवसर पर जारी की गई अपील पढ़कर सुनाई। उन्होंने सभी उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी पखवाड़ा के आयोजन का मुख्य उद्देश्य सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी में कार्य करने की आदत डालना है। अतः इन प्रतियोगिताओं में अधिकाधिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भाग लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि दुनिया में लगभग 120 करोड़ लोग हिंदी बोलते या समझते हैं और 150 देशों में हिंदी का अस्तित्व है जिनमें जर्मनी, मॉरीशस, नेपाल, त्रिनिदाद, सूरीनाम, गुयाना, न्यूजीलैंड, अफ्रीका एवं अमेरिका प्रमुख हैं।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने कहा था "जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है वह उन्नत नहीं हो सकता।" इसी बात को अमेरिकी लेखक वाल्टर चौनिंग की भाषा में कुछ इस तरह कहा गया है कि "विदेशी भाषा में किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा का होना सांस्कृतिक दास्तान है।" इन दोनों विचारों में हिंदी की वर्तमान स्थिति झलकती है।

हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह 28 सितंबर, 2020 को कार्यपालक निदेशक (टीसी), श्री वी.के. बड़ोनी की अध्यक्षता में किया गया। जिसमें विजेता प्रतिभागियों को कार्यपालक निदेशक (टीसी), श्री वी.के. बड़ोनी, महाप्रबंधक (पीएसपी), श्री के.पी. सिंह, महाप्रबंधक (ओएंडएम), श्री सजीव आर, महाप्रबंधक (ईएम, एचएम), श्री एस.एस. पंवार एवं उप महा प्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन) श्री बी.के. सिंह द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

निबंध प्रतियोगिता में श्री आदित्य मिश्र–प्रथम, श्री आशीष पाठक–द्वितीय, श्री वी.पी. भट्ट–तृतीय एवं श्री वी.पी.एस. रावत ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता में श्री दीपक उनियाल–प्रथम, श्री शशांक लाल–द्वितीय, श्री आदित्य मिश्र–तृतीय एवं श्री मोहित गोयल ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

अनुवाद प्रतियोगिता में श्री वी.पी. भट्ट –प्रथम, श्री दीपक उनियाल–द्वितीय, श्री आदित्य मिश्र–तृतीय एवं श्री सौरभ द्विवेदी ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह में कार्यपालक निदेशक (टीसी), श्री वी.के. बड़ोनी, महाप्रबंधक (पीएसपी), श्री के.पी. सिंह, महाप्रबंधक (ओएंडएम), श्री सजीव आर, महाप्रबंधक (ईएम,एचएम), श्री एस.एस. पंवार एवं उप महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन), श्री बी.के.सिंह

सुलेख प्रतियोगिता में श्री डी.सी. भट्ट– प्रथम, श्री अतुल कुमार–द्वितीय, श्री वी.पी.एस.रावत–तृतीय एवं श्री शेर सिंह रावत ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

टंकण प्रतियोगिता में श्री सुरेन्द्र सिंह रावत–प्रथम, श्री शशांक लाल –द्वितीय, श्री विजय कुमार –तृतीय एवं श्री मोहित गोयल ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

वाद–विवाद प्रतियोगिता में श्री सौरभ दिवेदी –प्रथम, श्री वी.पी.एस. रावत–द्वितीय, श्री राजेंद्र सिंह –तृतीय एवं श्री तनुज सिंह राणा ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया था जिसमें विजेता प्रतिभागियों को प्रश्न का सही उत्तर देने पर उसी समय पुरस्कृत किया गया।

इसके अलावा राजभाषा हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले 10 अधिकारियों/कर्मचारियों को भी पुरस्कार प्रदान किए गए। वर्ष 2019–20 के दौरान राजभाषा हिंदी में अच्छा कार्य करने के लिए राजभाषा चल वैजयंती ट्राफी प्रदान की गई। जिसमें प्रथम ट्राफी विद्युत विभाग एवं द्वितीय गुणवत्ता नियंत्रण विभाग को प्रदान की गई।

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह में विजेताओं को पुरस्कृत करते अधिकारीगण

इस अवसर पर श्री राजीव गोविल, अपर महाप्रबंधक (विद्युत गृह), श्री अभिषेक गौड़, अपर महाप्रबंधक, (बीसीएम), श्री एम.के.सिंह, अपर महाप्रबंधक (यांत्रिक), श्री संदीप कुमार, अपर महाप्रबंधक (नियोजन),

ऐसे जियो जैसे कि तुम कल मरने वाले हो। ऐसे सीखो कि तुम हमेशा के लिए जीने वाले हो – **महात्मा गांधी**

श्री राजेश शर्मा, अपर महाप्रबंधक (सीएंडएमएम), श्री संदीप भटनागर, उप महाप्रबंधक (वित्त), श्री मृदुल दुबे, उप महाप्रबंधक (वित्त), श्री वी.के.शर्मा, उप महाप्रबंधक (विद्युत), श्री वी.बी.एस. यादव, उप महाप्रबंधक (सेफ्टी), श्री डी.सी.भट्ट, वरिष्ठ प्रबंधक, श्री मोहन सिंह, प्रबंधक, श्री शशांक लाल, प्रबंधक, श्री दीपक उनियाल, उप प्रबंधक, श्री मनबीर नेगी, उप प्रबंधक एवं सभी प्रतिभागियों सहित बड़ी संख्या में कार्मिक उपस्थित थे।

कोटेश्वर यूनिट

कोटेश्वर हाइड्रो इलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट, कोटेश्वरपुरम में 14 सितंबर, 2020 को हिंदी दिवस एवं 14–28 सितंबर, 2020 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। हिंदी दिवस के सुअवसर पर हिंदी पखवाड़ा का शुभारंभ हुआ।

समारोह की अध्यक्षता महाप्रबंधक (परियोजना), श्री यू.के. सक्सेना ने की। इस अवसर पर महाप्रबंधक (परियोजना), श्री यू.के. सक्सेना एवं उपस्थित वरिष्ठ अधिकारियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। हिंदी दिवस समारोह में माननीय केंद्रीय नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री आर.के. सिंह के द्वारा हिंदी दिवस पर जारी संदेश को महाप्रबंधक (परियोजना), श्री यू.के. सक्सेना ने पढ़कर सुनाया तथा इस अवसर पर टीएचडीसी इंडिया लि. के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के द्वारा जारी अपील उप महाप्रबंधक (का. एवं प्रशा.), श्री बी.के. सिन्हा ने उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों के समक्ष पढ़कर सुनाई। हिंदी में काम–काज को बढावा देने हेतु कर्मचारियों/अधिकारियों के लिए हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनमें कोविड–19 महामारी के दौरान सरकार द्वारा जारी निर्देशों/एसओपी का अनुपालन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों तथा निगम में लागू विभिन्न राजभाषा प्रोत्साहन योजनाओं के तहत चयनित कर्मचारियों/अधिकारियों का विवरण निम्नवत है–

हिंदी दिवस समारोह में दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते वरि. अधिकारीगण

दिनांक 14.09.2020 को आयोजित हुई नोटिंग–ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता में श्री आशुतोष गैरोला, प्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण)–प्रथम, श्री भरत सिंह नकोटी, वरि. प्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण)–द्वितीय, श्री सिद्धार्थ कौशिक, उप प्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण)–तृतीय रहे। साथ ही श्री मोहम्मद वसीम, प्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण) एवं श्री शिव प्रसाद बेलवाल, सहायक टंकक (का. एवं प्रशा.) ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

दिनांक 15.09.2020 को आयोजित हुई हिंदी निबंध प्रतियोगिता में श्री पुरूषोत्तम सिंह रावत, वरि. सुरक्षा अधिकारी (सुरक्षा)–प्रथम, श्री दौलत सिंह नेगी, अधिकारी–ईडीपी (का. एवं प्रशा.)–द्वितीय, श्री सिद्धार्थ कौशिक, उप प्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण)–तृतीय रहे। साथ ही श्री विपुल चौधरी, प्रबंधक (विद्युत) एवं श्री कमलेश्वर प्रसाद भट्ट, वरि. सहायक (नियोजन) ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

दिनांक 16.09.2020 को आयोजित हुई अनुवाद प्रतियोगिता में श्री कुंवर आकाश सक्सेना, उप प्रबंधक. (प्रचालन एवं अनुरक्षण)–प्रथम, श्री सिद्धार्थ कौशिक, उप प्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण)–द्वितीय, श्री अमित कुमार भान, प्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण)–तृतीय रहे। साथ ही श्री आशीष कुमार सिंह, उप प्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण) एवं श्री राजेन्द्र सिंह, वरि. अभियंता (प्रचालन एवं अनुरक्षण) ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

दिनांक 17.09.2020 को आयोजित हुई टंकण प्रतियोगिता में कु. श्वेता गुनसोला, आशुलिपिक (हिंदी) प्रशिक्षु (वित्त एवं लेखा)–प्रथम, श्री दुर्गेश चन्द्र, आशुलिपिक (हिंदी) प्रशिक्षु (का. एवं प्रशा.)–द्वितीय, श्री दयाल सिंह, सहायक टंकक (नियोजन)–तृतीय रहे। साथ ही श्री दौलत सिंह नेगी, अधिकारी–ईडीपी (का. एवं प्रशा.) एवं श्री एस.एस. रांगड़, कनि. कार्यपालक (का. एवं प्रशा.) ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

विजेता प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित करते महाप्रबंधक (परि.), श्री यू.के. सक्सेना

दिनांक 18.09.2020 को आयोजित हुई स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता में श्री सिद्धार्थ कौशिक, उप प्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण)–प्रथम, श्री पुरूषोत्तम सिंह रावत, वरि. सुरक्षा अधिकारी (सुरक्षा)–द्वितीय, श्री गिरीश उनियाल, उप प्रबंधक (का. एवं प्रशा.)–तृतीय रहे। साथ ही श्री एस.एस. राणा, उप प्रबंधक (का. एवं प्रशा.) एवं श्री सुनील कुमार राज, सहायक (बांध एवं विद्युत गृह) ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

दिनांक 19.09.2020 को हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में प्रत्येक प्रश्न का सही उत्तर देने पर विजेता को नगद पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके साथ ही विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत विभागों, अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया। मूलरूप से हिंदी में टिप्पण/आलेखन करने वाले 10 कर्मचारी/अधिकारियों को पुरस्कृत किया गया जिनमें श्री विवेक बड़ोनी, प्रबंधक, श्री राजपाल आर्य, सहायक टंकक–प्रथम, श्री उपेन्द्र सिंह नेगी, उप प्रबंधक, श्री कीर्ति अरोड़ा, उप प्रबंधक, श्री एस.एस. राणा, उप प्रबंधक– द्वितीय तथा श्री वाई.एस. रावत, उप प्रबंधक, श्री के.एस. राणा, उप प्रबंधक, श्री के.एल. व्यास, वरि. आशुलिपिक, श्री दौलत सिंह नेगी, अधिकारी (ईडीपी) एवं श्री कमलेश्वर प्रसाद, वरि.सहायक – तृतीय रहे।

हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अनुभागाध्यक्षों/विभागाध्याक्षों की श्रेणी में श्री गजेन्द्र सिंह, उप महाप्रबंधक (सुरक्षा) – प्रथम, श्री राम बाबू सिंह, उप महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा)– द्वितीय तथा श्री हर्ष कुमार, उप महाप्रबंधक (नियोजन) – तृतीय रहे।

हिंदी में अधिकाधिक डिक्टेशन देने वाले कार्यपालक– हिंदीभाषी क्षेत्र के श्री एस.एस.नेगी, वरि.प्रबंधक (सी. एण्ड एम.एम.) – प्रथम तथा श्री पुरूषोत्तम सिंह रावत, वरि. सुरक्षा अधिकारी (सुरक्षा) – द्वितीय रहे। हिंदीतर क्षेत्र में श्री कन्नोदासन एस., प्रबंधक–प्रथम एवं डॉ. जी. श्रीनिवास, मुख्य चिकित्सा अधिकारी–द्वितीय रहे।

हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले वित्त एवं लेखा विभाग को 2019–20 के लिए अंतर विभागीय चल राजभाषा ट्राफी प्रदान की गई तथा कार्मिक एवं प्रशासन विभाग को उत्तरोत्तर प्रगतिगामी चल राजभाषा ट्रॉफी प्रदान की गई।

वित्त एवं लेखा विभाग को अंतर विभागीय चल राजभाषा ट्रॉफी प्रदान करते महाप्रबंधक (परि.), श्री यू.के. सक्सेना

28 सितंबर, 2020 को हिंदी पखवाड़ा का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह सादगी के साथ मनाया गया। समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री यू.के. सक्सेना, महाप्रबंधक (परियोजना) द्वारा कोविड–19 को देखते हुए आयोजित प्रतियोगिताओं/विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के तहत प्रथम स्थान पर रहे विजेता कर्मचारियों एवं अधिकारियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर पुरस्कृत किया गया तथा अन्य विजयी रहे प्रतिभागियों को संबंधित विभागाध्यक्षों के द्वारा प्रमाण–पत्र प्रदान कर पुरस्कृत किया गया। सभी विजेता प्रतिभागियों के प्रदत पुरस्कार धनराशि का भुगतान वित्त विभाग के माध्यम से किया गया। इस अवसर पर श्री सक्सेना ने सभी विजेताओं को बधाई दी और सभी से अनुरोध किया कि वे अपना समस्त कार्य हिंदी में करने का प्रयास करें ताकि हम निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति कर सके।

अंत में, हिंदी पखवाड़ा समापन पर श्री बी.के. सिन्हा, उप महाप्रबंधक (का.एवं प्रशा.) ने हिंदी पखवाड़ा को सफल बनाने हेतु समस्त विभागाध्यक्षों एवं कर्मचारी प्रतिभागियों का आभार प्रकट किया। समापन के अवसर पर कोटेश्वर यूनिट के सभी विभागाध्यक्ष/अनुभागाध्यक्ष उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन वरि. हिंदी अधिकारी, श्री डी.एस.रावत ने किया।

एनसीआर कार्यालय, कौशांबी

मुख्यालय के निर्देशानुसार एनसीआर कार्यालय, कौशांबी, गाजियाबाद में दिनांक 14 से 28 सितंबर, 2020 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। दिनांक 14.09.2020 को कार्यक्रम का शुभारंभ श्री आर.एन. सिंह, महाप्रबंधक (एस.पी.) द्वारा किया गया। महाप्रबंधक (एस.पी.) महोदय ने समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दी एवं हिंदी पखवाड़ा के महत्व पर अपने विचार साझा किए। तत्पश्चात श्री सिंह द्वारा अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय

हिंदी दिवस समारोह में दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते वरि. अधिकारीगण

का संदेश सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को पढ़कर सुनाया गया। उन्होंने अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालय में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने की सलाह दी तथा आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक भाग लेने हेतु प्रेरित किया। हिंदी दिवस के अवसर पर एवं हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

दिनांक 28.09.2020 को एनसीआर कार्यालय, कौशांबी में हिंदी पखवाड़ा का समापन किया गया जिसमें श्री उमेश चन्द्र कन्नौजिया, महाप्रबंधक (एनसीआर) एवं श्री आर.एन. सिंह, महाप्रबंधक (एस.पी.) द्वारा प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

दिनांक 16.09.2020 को आयोजित हुई हिंदी निबंध प्रतियोगिता में श्रीमती रजनी बिष्ट, उप अधिकारी (सेकेट्रियल)–प्रथम, श्री आशीष कुमार जैन, कनिष्ठ अधिकारी– द्वितीय, श्रीमती विशालाक्षी मालान, उप प्रबंधक– तृतीय एवं श्री ईश्वर सिंह यादव, उप अधिकारी (कार्यालय प्रशासन) व श्रीमती बिनसी बाबू, उप प्रबंधक को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया।

दिनांक 18.09.2020 को आयोजित हुई हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता में श्री सुदेश गोरा, वरि. अभियंता– प्रथम, श्रीमती रजनी बिष्ट, उप अधिकारी (सेकेट्रियल)– द्वितीय, श्री हेमेन्द्र सिंह, वरि. अभियंता–तृतीय, एवं श्री आशीष कुमार जैन, कनिष्ठ अधिकारी व श्री मनोज कुमार, वरि. अभियंता ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

दिनांक 21.09.2020 को आयोजित हुई हिंदी नारा प्रतियोगिता में श्री रोहित जोशी, वरि. कार्यपालक सचिव– प्रथम, श्री आर.के. पाण्डेय, उप प्रबंधक– द्वितीय, श्रीमती सुनीता शर्मा– तृतीय, एवं श्री सुदेश गोरा, वरि. अभियंता व श्रीमती विशालाक्षी मालान, उप प्रबंधक ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

हिंदी में मूल रूप से सर्वाधिक कार्य करने वाले 10 अधिकारियों/कर्मचारियों को भी पुरस्कार वितरित किए गए जिसमें श्री आर.एस. पाण्डेय, वरि. प्रबंधक व श्री दिनेश चन्द्र भारती, उप प्रबंधक–प्रथम, श्री पदम कुमार शर्मा, उप अधिकारी (कार्यालय–प्रशासन), श्री आर.के. पाण्डेय, उप प्रबंधक व श्री सुभाष यादव, उप अधिकारी (कार्यालय–प्रशासन)– द्वितीय, श्री अनिल कुमार पाण्डेय, उप अधिकारी (कार्यालय प्रशासन), श्री रोहित जोशी, वरि. कार्यपालक सचिव, श्रीमती सुनीता टम्टा, प्रबंधक, श्रीमती शैला, उप प्रबंधक व श्री दिलवर सिंह पंवार, उप अधिकारी (कार्यालय प्रशासन) को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

विभागाध्यक्षों/अनुभागाध्यक्षों के लिए हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु पुरस्कार योजना के तहत श्री एस.एम. सिद्दिकी, उप महाप्रबंधक–प्रथम, श्री सुशील कुमार शर्मा, वरि. प्रबंधक–द्वितीय एवं श्री मनोज सरदाना, अपर महाप्रबंधक को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

हिंदी में सर्वाधिक डिक्टेशन देने वाले विभागाध्यक्षों में हिंदी भाषी क्षेत्र के श्री संजय सिंघल, अपर महाप्रबंधक–प्रथम, एवं श्री संदीप चेकर, उप महाप्रबंधक को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। हिंदीतर भाषी क्षेत्र के श्री जी. राधाकृष्णन, वरि. प्रबंधक–प्रथम एवं श्री मल्लिकार्जुन उदयगिरि, वरि. प्रबंधक को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर श्री एस.एम. सिद्दिकी, उप महाप्रबंधक (कार्मिक/वाणिज्यिक) द्वारा हिंदी पखवाड़ा में भाग लेने व कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सभी का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया गया।

स्वर्ग और नरक दोनों हमारे भीतर हैं – **महात्मा गांधी**

वीपीएचईपी, पीपलकोटी यूनिट कार्यालय

विष्णुगाड पीपलकोटी एचईपी, पीपलकोटी में 14–28 सितंबर, 2020 के दौरान हिंदी पखवाड़ा उल्लास के साथ मनाया गया। पखवाड़ा का शुभारंभ 14 सितंबर, 2020 को हिंदी दिवस समारोह के आयोजन से हुआ। हिंदी दिवस समारोह की अध्यक्षता श्री पी.के. अग्रवाल, अपर महाप्रबंधक (प्रभारी–सिविल) ने की। कार्यक्रम में श्री ए.के. गोयल, अपर महाप्रबंधक (नियोजन), श्री विजय सहगल, अपर महाप्रबंधक (सामाजिक एवं पर्यावरण) के साथ सीमित संख्या में अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यक्रम में सोशल डिस्टेंसिंग का ध्यान रखा गया। श्री पी.के. अग्रवाल, अपर महाप्रबंधक प्रभारी (सिविल) ने सर्वप्रथम दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उन्होंने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भारत के माननीय गृहमंत्री, श्री अमित शाह, माननीय नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री डी.वी. सिंह की हिंदी दिवस के अवसर पर जारी की गई अपील सभी कर्मचारियों को पढ़कर सुनाई।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिनके विजेताओं को 28 सितंबर, 2020 को पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कृत किया गया। इसके साथ ही कारपोरेट कार्यालय से प्राप्त परिपत्र के अनुसार प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत भी कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया।

हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता में श्री रविन्द्र सिंह मखलोगा, वरि. प्रबंधक (बांध) – प्रथम, श्री शील कुमार सक्सेना, उप महाप्रबंधक (सतर्कता) – द्वितीय, श्री शरद चन्द्र भट्ट, वरि. प्रबंधक (सामाजिक)– (तृतीय), श्री नंद किशोर नौटियाल, वरि. प्रबंधक (संविदा एवं सामग्री प्रबंधन) – सांत्वना–।, श्री ए.एल. संतोष कुमार, प्रबंधक (का.एवं प्रशा.) – सांत्वना–।। स्थान पर रहे।

निबंध प्रतियोगिता में श्री शरद चन्द्र भट्ट, वरि. प्रबंधक (सामाजिक) ने प्रथम, श्री नंद किशोर नौटियाल, वरि. प्रबंधक (संविदा एवं सामग्री प्रबंधन) ने द्वितीय, श्री शील कुमार सक्सेना, उप महाप्रबंधक (सतर्कता) ने तृतीय, श्री प्रशांत द्विवेदी, वरि. अभियंता (विद्युत गृह) ने सांत्वना–।, श्री मस्तन सिंह पंवार, अधिकारी (विद्युत गृह) ने सांत्वना–।। पुरस्कार प्राप्त किया।

नोटिंग–ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता में श्री शील कुमार सक्सेना, उप महाप्रबंधक (सतर्कता) ने प्रथम, श्री रविन्द्र सिंह मखलोगा, वरि. प्रबंधक (बांध) ने द्वितीय, श्री शरद चन्द भट्ट, वरि. प्रबंधक (सामाजिक) ने तृतीय, श्री नंद किशोर नौटियाल, वरि. प्रबंधक (संविदा एवं सामग्री प्रबंधन) ने सांत्वना–।, श्री राकेश बंसल, उप प्रबंधक (टी.बी.एम.) ने सांत्वना–।। पुरस्कार प्राप्त किया।

हिंदी टंकण प्रतियोगिता में श्री विकास चन्द्र, सहायक ने प्रथम, श्री संदीप कुमार, सहायक ने द्वितीय, श्री मनोज कुमार, सहायक ने तृतीय, श्री भगवती प्रसाद, सहायक ने सांत्वना–।, श्री सरोज कुमार, सहायक ने सांत्वना–।। पुरस्कार प्राप्त किया।

स्वरचित हिंदी काव्य प्रतियोगिता में श्री शरद चन्द्र भट्ट, वरि. प्रबंधक (सामाजिक) ने प्रथम, श्री शील कुमार सक्सेना, उप महाप्रबंधक (सतर्कता) ने द्वितीय, श्री सुनील हटवाल, परिचारक ने तृतीय, श्री भगवती प्रसाद, सहायक ने सांत्वना–।, श्री राजीव कुमार कंसल, वरि. प्रबंधक (टी.बी.एम.) ने सांत्वना–।। पुरस्कार प्राप्त किया।

हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में श्री सरोज कुमार, सहायक – प्रथम, श्रीमती पुष्पा टम्टा., परिचारक–द्वितीय, श्री शरद चन्द्र भट्ट, वरि. प्रबंधक (सामाजिक) – तृतीय, श्री मनोज कुमार, सहायक– सांत्वना–I, श्री प्रशांत द्विवेदी, वरि. अभियंता (विद्युत गृह) – सांत्वना–II स्थान पर रहे।

वर्ष के दौरान मूल रूप से हिंदी में टिप्पण आलेखन करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों में श्री संदीप गुप्ता, उप महाप्रबंधक (भवन/सड़क/संरक्षा) एवं श्री एस.के.शर्मा, उप महाप्रबंधक (का. एवं प्रशा.) को प्रथम, श्री नंद किशोर, वरि. प्रबंधक (भवन एवं सड़क), श्री रमेश चन्द्र चौहान, प्रबंधक (विद्युत एवं संचार) व श्री जे.पी. सकलानी, प्रबंधक (कार्मिक–विधि) को द्वितीय, श्री संजीव कुमार मित्तल, वरि. प्रबंधक (नियोजन), श्री हरदेव पंत, वरि. प्रबंधक (बांध), श्री ओम प्रकाश आर्य, वरि. प्रबंधक (संविदा प्रचालन), श्री बलबीर सिंह, वरि. कार्यपालक सचिव व श्री के. रामा रेड्डी, प्रबंधक (का. एवं प्रशा.) को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

अनुभागाध्यक्षों/विभागाध्यक्षों हेतु उत्कृष्ट कार्य करने के लिए श्री विजय सहगल, अपर महाप्रबंधक (सामा. एवं पर्या.) ने प्रथम, श्री आल्हा सिंह, उप महाप्रबंधक (बांध) ने द्वितीय एवं श्री अनिल त्यागी, उप महाप्रबंधक (टी.बी.एम.) ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

हिंदी में अधिकाधिक डिक्टेशन देने वाले कार्यपालकों में हिंदी भाषी क्षेत्र से श्री पी.के. अग्रवाल, अपर महाप्रबंधक (प्रभारी–सिविल) – प्रथम एवं श्री अजय कुमार गोयल, अपर महाप्रबंधक (नियोजन) को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके साथ ही हिंदीतर क्षेत्र से श्री श्रीकांत बैनर्जी, उप महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा)– प्रथम एवं श्री एस.जे. जयकुमार, उप महाप्रबंधक (विद्युत गृह) को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

हिंदी पखवाड़ा के समापन अवसर पर श्री पी.के. अग्रवाल, अपर महाप्रबंधक (प्रभारी–सिविल) ने अपने कर–कमलों से विजेता रहे कर्मचारियों को पुरस्कृत किया। इस अवसर पर श्री ए.के. गोयल, अपर महाप्रबंधक (नियोजन), श्री विजय सहगल, अपर महाप्रबंधक (सामाजिक एवं पर्यावरण) एवं श्री एस.के. शर्मा, उप महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन) ने मंच की शोभा बढ़ाई। श्री पी.के. अग्रवाल ने अपने संबोधन में यूनिट के सभी कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रेरित करते हुए कहा कि हिंदी में कार्य करना आसान है तथा हिंदी में कार्य करने की सभी सुविधाएं राजभाषा विभाग द्वारा निःशुल्क उपलब्ध कराई जा रही हैं तथा यूनिट के अधिकांश कर्मचारी हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखते हैं इसलिए हम अपना समस्त कामकाज राजभाषा हिंदी में करते हुए अपने लक्ष्यों को पूरा करें।

श्री जे.के. सकलानी, प्रबंधक (विधि) ने कहा कि कारपोरेट कार्यालय के द्वारा यूनिट को भारत के राजपत्र में अधिसूचित कराने संबंधी विवरण मांगे गए थे जिन्हें कारपोरेट कार्यालय को प्रेषित कर दिए गए हैं तथा कारपोरेट कार्यालय से सूचना प्राप्त हुई है कि अधिसूचना से संबंधित विवरण विद्युत मंत्रालय को भेजे जा चुके हैं। अतः हम सबकी राजभाषा हिंदी के प्रति जिम्मेदारी ओर भी अधिक बढ़ गई है। उन्होंने मुख्य अतिथि तथा सभी वरिष्ठ अधिकारियों एवं हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा प्रोत्साहन योजनाओं के विजेताओं को बधाई देते हुए कार्यक्रम को सफल बनाने में सबका योगदान देने हेतु धन्यवाद दिया।

अन्य कार्यालय

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के ऐसे कार्यालयों में हिंदी दिवस/सप्ताह का आयोजन किया गया जिनमें मानव शक्ति सीमित संख्या में है एवं जो पूर्ण रूप से स्थापित होने की ओर अग्रसर हैं। देहरादून एवं नैनीताल के संपर्क कार्यालयों

को कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में आयोजित किए जाने वाले हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम में शामिल किया गया। खुर्जा एसटीपीपी, खुर्जा, उ.प्र., ढुकुवां लघु विद्युत परियोजना (24 मेगावाट), झांसी, उ.प्र. के साथ सभी कार्यालयों में हिंदी दिवस एवं हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया।

कार्यालय प्रमुखों ने कर्मचारियों को माननीय केंद्रीय गृहमंत्री, श्री अमित शाह, माननीय नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री आर.के. सिंह, निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री डी.वी. सिंह के द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर जारी की गई अपील सभी उपस्थित प्रतिभागियों को पढ़कर सुनाई एवं अपना समस्त सरकारी कामकाज हिंदी में करने का आह्वान किया।

उक्त कार्यालयों में मानव शक्ति की संख्या के अनुरूप विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा समापन समारोह में विजेता कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त राजभाषा विभाग द्वारा जारी विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत पुरस्कार प्रदान कर अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रोत्साहित किया गया।

विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत करते श्री एस.पी. सिंह, महाप्रबंधक, खुर्जा एसटीपीपी, खुर्जा

टीएचडीसी लेडीज वेलफेयर एसोशिएशन ने भी मनाया हिंदी दिवस

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, ऋषिकेश में टीएचडीसी लेडीज वेलफेयर एसोशिएशन ने हिंदी के प्रति अपना सम्मान प्रकट करते हुए एवं जागरूकता प्रदर्शित करते हुए गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिंदी दिवस मनाया। यह प्रतियोगिता ऑन–लाइन आयोजित की गई जिसमें एसोशिएशन की संरक्षिकाएं, श्रीमती सुनीता सिंह, श्रीमती मुदिता गोयल, श्रीमती चंचल विश्नोई और श्रीमती संगारिका बेहरा की ऑन–लाइन उपस्थिति में एसोशिएशन की सदस्याओं ने प्रतिभागिता की। इस अवसर पर हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें हिंदी व्याकरण, सामान्य हिंदी, अंग्रेजी के शब्दों के हिंदी पर्याय आदि पर प्रश्न पूछे गए। सभी विजेता प्रतिभागी सदस्याओं को पुरस्कृत किया गया।

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 15 सितंबर, 2020 को उप महाप्रबंधक तथा वरिष्ठ प्रबंधक स्तर के कार्यपालकों तथा नराकास हरिद्वार के सदस्य संस्थानों के कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन ऑनलाईन वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ श्री ईश्वरदत्त तिग्गा, उप महाप्रबंधक (कार्मिक–स्थापना/हिंदी) ने मुख्य संकाय सदस्य, अंतरराष्ट्रीय गीतकार एवं ओएनजीसी के पूर्व राजभाषा प्रमुख, श्री बुद्धिनाथ मिश्र के स्वागत के साथ किया। श्री तिग्गा ने इस अवसर पर अपने संबोधन में कहा कि कार्यशाला से जुड़े सभी प्रतिभागी श्री बुद्धिनाथ मिश्र जी जैसे विद्वान से राजभाषा विषयक जितना अधिक हो सके, उतना ज्ञान प्राप्त कर उसका उपयोग अपने कार्यालय के कार्य में करें। श्री बुद्धिनाथ मिश्र ने प्रतिभागियों को राजभाषा की अनिवार्यता एवं देश विदेश में हिंदी की सुदृढ़ होती स्थिति के संबंध में अपना व्याख्यान दिया। इस अवसर पर वरि. हिंदी अधिकारी, श्री पंकज कुमार शर्मा ने प्रतिभागियों को हिंदी टिप्पण लेखन का अभ्यास भी कराया।

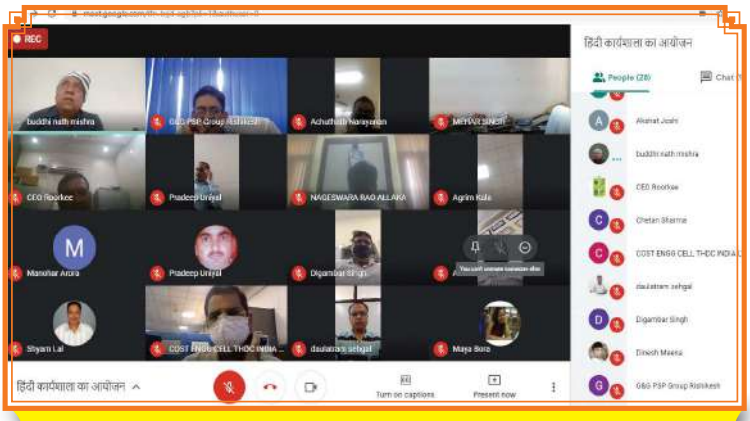

हिंदी कार्यशाला में ऑनलाइन व्याख्यान देते श्री बुद्धिनाथ मिश्र, अंतरराष्ट्रीय गीतकार एवं पूर्व राजभाषा प्रमुख, ओनएनजीसी, देहरादून

दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन करते उप महाप्रबंधक, कार्मिक एवं प्रशासन, श्री बी.के. सिंह, संकाय सदस्य, डॉ. संजीव नेगी एवं अन्य अधिकारीगण

टिहरी यूनिट

टिहरी यूनिट में 29–30 सितंबर, 2020 को कर्मचारियों के लिए दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे उप महाप्रबंधक (का. एवं प्रशा.), श्री बी.के. सिंह एवं मुख्य संकाय सदस्य डॉ. संजीव नेगी, प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय, नई टिहरी का स्वागत पुस्तक भेंट कर किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ उप महाप्रबंधक (का. एवं प्रशा.) श्री बी.के. सिंह एवं मुख्य संकाय सदस्य डॉ. संजीव नेगी, प्रबंधक (हिंदी), श्री इन्द्र राम नेगी द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

मैं उन्हें धार्मिक कहता हूं जो दूसरों की पीड़ा को समझता है – **महात्मा गांधी**

इस अवसर पर उप महाप्रबंधक (का. एवं प्रशा.) श्री बी.के. सिंह ने राजभाषा के स्वरुप एवं महत्व पर बल देते हुए कहा कि हम सभी 'क' क्षेत्र में आते हैं इसलिए हम सुनिश्चित करें कि हम अपने समस्त कार्य हिंदी में ही करें। हमें अपने सभी कार्यालयीन कार्यों को शत–प्रतिशत हिंदी में संपन्न कर हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए।

कार्यशाला में आमंत्रित संकाय सदस्य डॉ. संजीव नेगी, प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय, नई टिहरी ने उपस्थित प्रतिभागियों को हिंदी भाषा का वर्तमान स्वरूप एवं भविष्य तथा कार्यालयीन हिंदी के स्वरूप, देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता एवं हिंदी पत्राचार के विविध रूप पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली व्याख्यान दिया एवं अपने अनुभवों से प्रतिभागियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रबंधक (हिंदी), श्री इन्द्रराम नेगी, द्वारा कंप्यूटर व मोबाइल में हिंदी वॉइस टाइपिंग, कार्यालय में मानक एवं तकनीकी शब्दावली का प्रयोग, राजभाषा अधिनियम एवं नियम, टिप्पण एवं आलेखन पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण दिया। कार्यशाला का संचालन श्रीमती नीरज सिंह, कनि. अधिकारी (हिंदी) द्वारा किया गया। कार्यशाला में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी के 24 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कोटेश्वर यूनिट

कोटेश्वर यूनिट में कामगार श्रेणी के कर्मचारियों हेतु दिनांक 03.09.2020 एवं 04.09.2020 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका आयोजन कोविड–19 के संक्रमण के दृष्टिगत एसओपी का ध्यान रखते हुए किया गया। दिनांक 03.09.2020 को हिंदी कार्यशाला का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्री यू.के. सक्सेना, महाप्रबंधक (परियोजना) ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। उक्त 02 दिवसीय कार्यशाला में आंतरिक संकाय सदस्य श्री डी.एस. रावत, वरि. हिंदी अधिकारी, कोटेश्वर द्वारा व्याख्यान दिए गए जिसमें प्रतिभागियों को राजभाषा अधिनियम, नियम के साथ–साथ किस प्रयोजन हेतु विभागीय पत्र, परिपत्र, नोटशीट, अन्तर कार्यालय ज्ञापन एवं कार्यालय आदेश आदि का प्रयोग और प्रशासनिक शब्दों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।

कोटेश्वर यूनिट में दिनांक 20.10.2020 एवं 21.10.2020 तक द्वितीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। दिनांक 20.10.2020 को आयोजित हिंदी कार्यशाला का शुभारंभ श्री डी.पी.एस रांगड़ वरि. प्रबंधक (बांध एवं पावर हाउस) के संबोधन से हुआ। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि कोटेश्वर परियोजना में कार्यरत सभी कर्मचारियों को रोस्टर के अनुसार हिंदी कार्यशालाओं में प्रतिभाग करवाया जा रहा है तथा कार्यशाला में दी जा रही जानकारी को सभी प्रतिभागीगण अपने सरकारी कामकाज में प्रयोग करें। उक्त 02 दिवसीय कार्यशाला में आंतरिक संकाय सदस्य श्री डी.एस.रावत, वरि. हिंदी अधिकारी, कोटेश्वर द्वारा

दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन करते वरि. प्रबंधक, श्री डी.पी.एस. रांगड़ एवं वरि.हिंदी अधिकारी, श्री डी.एस. रावत

व्याख्यान दिए गए जिसमें प्रतिभागियों को राजभाषा अधिनियम, नियम के साथ–साथ सरकारी प्रयोजन हेतु विभागीय पत्र, परिपत्र, नोटशीट, अन्तर कार्यालय ज्ञापन एवं कार्यालय आदेश आदि का प्रयोग और प्रशासनिक शब्दों के बारे में भी विस्तृत जानकारी प्रदान करने के साथ–साथ कार्यस्थल पर कार्य की प्रकृति के अनुसार हिंदी कार्य को बढ़ाने के लिए कई तरीके/उपाए बताए गए।

एनसीआर कार्यालय, कौशांबी

एनसीआर कार्यालय, कौशांबी में 22 सितंबर, 2020 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ महाप्रबंधक (एनसीआर), श्री यू.सी. कन्नौजिया की अध्यक्षता में हुआ। कार्यशाला में विद्युत मंत्रालय के संयुक्त निदेशक (राजभाषा), श्री अमित प्रकाश को आमंत्रित किया गया था। श्री कन्नौजिया ने श्री अमित प्रकाश का स्वागत पुष्प गुच्छ भेंट कर किया।

हिंदी कार्यशाला का दृश्य

श्री अमित प्रकाश ने अपने व्याख्यान में राजभाषा अधिनियम, 1963 एवं राजभाषा नियम, 1976 के अंतर्गत राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए किए गए प्रावधानों के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी। इसके साथ ही श्री अमित प्रकाश ने उदाहरण देते हुए छोटे–छोटे वाक्यों एवं शब्दों का प्रयोग कैसे सरलता से किया जाए, इसकी भी जानकारी दी।

हास्य लेखन प्रतियोगिता का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 21 दिसंबर से 24 दिसंबर, 2020 तक हास्य लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से हास्य व्यंग्य से भरपूर लेख, कविता चुटकुले, प्रसंग आदि आमंत्रित किए गए थे। दिनांक 24 दिसंबर, 2020 तक प्राप्त हुई प्रविष्टियों को मूल्यांकन कर विजेताओं की घोषणा की गई।

प्रतियोगिता में श्री अमरेन्द्र कुमार विश्वकर्मा, प्रबंधक (मा.सं.वि.) ने प्रथम, श्री दिलीप कुमार द्विवेदी, प्रबंधक (कार्मिक–कल्याण) ने द्वितीय एवं श्री एस. के. चौहान, उप महाप्रबंधक (परिकल्प) ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। इसके साथ ही श्री विपिन सिल्वाल, वरि. अभियंता (सतर्कता) एवं श्रीमती शीला चौहान, उप अधिकारी (ओ.एम. एस.) ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

सच्चाई कभी गलत नहीं हो सकती है, भले ही कोई इसे सुनता न हो – **महात्मा गांधी**

संपादक के नाम पाती

महोदय, पहल पत्रिका के प्रकाशन के लिए राजभाषा विभाग द्वारा आपकी सराहना की जाती है। हिंदी को सरकारी कामकाज में बढ़ावा देना हम सभी का संवैधानिक दायित्व है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था 'राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है'। हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए आपके द्वारा किए जा रहे प्रयास स्वरूप प्रकाशित पत्रिका का अवलोकन एवं अध्ययन करने पर निम्न सुझाव दिए जा रहे हैं, जिससे पत्रिका भविष्य में अधिक प्रेरणाप्रद एवं विचारोत्तेजक रूप में केंद्र सरकार के कार्मिकों को हिंदी में सरकारी कामकाज करने के लिए प्रेरित करने में प्रभावशाली भूमिका निभा सकें–

1. चित्रों की संख्या कम की जाए। 2. राजभाषा विभाग के ई–टूल्स का प्रचार किया जाए जिसके द्वारा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए निर्मित सूचना प्रौद्योगिकी के उन उपकरणों की जानकारी दी जाए जिससे हिंदी में मूल काम करने में सहायता मिले यथा लीला राजभाषा, लीला प्रवाह, ई–महाशब्दकोश, ई–सरल वाक्यकोश, ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म। 3. स्वास्थ्य व संस्कृति के साथ–साथ हास–परिहास पर केंद्रित अधिकांश रचनाएं सराहनीय हैं। आशा है आप भविष्य में भी राजभाषा के प्रगामी प्रयोग के प्रति इसी प्रकार निष्ठा एवं समर्पण से प्रयास जारी रखेंगे। शुभकामनाओं सहित.....

मंजुला सक्सेना
उप सचिव (अनुसंधान), गृह मंत्रालय,
राजभाषा विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली

आदरणीय महोदय, पहल' अंक–24 प्राप्त हुआ। पत्रिका के संपादक के रूप में आपने जिस गुरूतर दायित्व को संभाला है, आपको असीम शुभकामनाएं। पूर्ण विश्वास है कि आपके अथक परिश्रम से 'पहल' उपलब्धियों एवं सम्मानों के अनेक आयामों को स्पर्श करेगी। श्री आशुतोष कुमार आनंद का सामाजिक आलेख 'आ अब लौट चलें', श्री बी.पी. डोभाल का पौराणिक आलेख 'आचार्य कय्यट', श्री एस.के. चौहान की कविता 'नदी की पुकार' अत्यंत प्रशंसनीय है। पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में सशक्त रचनात्मक कौशल का परिचय दिया है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का विषय चयन, रिपोर्ट तथा फोटोग्राफ का सामंजस्य तथा प्रत्येक पृष्ठ के अंत में प्रकाशित 'अनमोल वचन' किसी भी पत्रिका के संपादक के लिए अनुकरणीय है। आशा है कि पत्रिका का आगामी अंक एक नए रचना–विधान के साथ प्रकाशित होगा। शुभकामनाओं सहित.....

डॉ. राजनारायण अवस्थी
वरि. अधिकारी (राजभाषा) एवं प्रभारी, राजभाषा अनुभाग
इलेक्ट्रानिक्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

महोदय, हिंदी विभाग द्वारा जारी की गई राजभाषा गृह पत्रिका ''पहल'' के 24वें अंक को प्राप्त करके मुझे अत्यंत खुशी का अनुभव हो रहा है। कोरोना महामारी के चलते किसी भी प्रकार का प्रकाश कर पाना असंभव सा प्रतीत होता है लेकिन आपके एवं आपकी टीम के कर्मठ प्रयासों से यह सम्पन्न हो पाया है। इस पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविताएं इत्यादि बहुत ही महत्वपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक हैं। आपके इस सफल प्रयास हेतु मेरी ओर से बहुत–बहुत शुभकामनाएं एवं आगामी प्रकाशित होने वाले ''पहल'' पत्रिका के अंक का मुझे इंतजार रहेगा। धन्यवाद.....

दिलीप कुमार द्विवेदी
प्रबंधक (कार्मिक–वेलफेयर)
टीएचडीसी इंडिया लि., ऋषिकेश

महोदय, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की राजभाषा हिंदी गृह पत्रिका ''पहल'' बहुत सुन्दर आकर्षक आवरण एवं क्लेवर लिए हुए तथा गागर में सागर समेटे हुए विषयगत रचनात्मक ज्ञान का भण्डार लिए हुए है। समसामयिक विषय, तकनीकी विषयक, स्वास्थ्य संबंधित लेख, प्रेरक प्रसंग, कविता तथा राजभाषा गतिविधि एवं कार्यक्रम के द्वारा रोचक, ज्ञानवर्धक, सरस सरल भाषा शैली में सुधी पाठकों हेतु प्रस्तुत की गई है। बहुत ही स्वागत योग्य है। मैं नियमित पाठक हूं और अपने कर्मचारियों की आज के वैश्विक अंग्रेजी के दौर में भी हिंदी के प्रति जागरूकता मन को संतोष प्रदान करती है। अतः हिंदी गृह पत्रिका ''पहल'' में मेरी कविताओं को सुन्दर रोचक ढंग से प्रस्तुत कर स्थान देने के लिए मैं हिंदी अनुभाग प्रबंधन का आभारी हूं और इससे प्रेरित हूं। आगे भी अपने अल्पज्ञान से पत्रिका को अपना सहयोग देता रहूंगा। धन्यवाद....

राजपाल आर्य
सहायक टंकक(सुरक्षा),
टीएचडीसी इंडिया लि., कोटेश्वर

श्रद्धेय पंकज जी, सर्वप्रथम श्रीवास्तव साहब की सेवानिवृत्ति के बाद ''पहल'' के पहले अंक को सफलतापूर्वक प्रकाशित करने हेतु साधुवाद। मेरे लेख को भी जगह देने के लिए हृदय से आभार, ईश्वर आपको सामर्थ्यवान बनाएं और राजभाषा के कार्यों के सफल संपादन हेतु आपको सबका मार्गदर्शन मिलता रहे, ऐसी शुभेक्षा है। सादर.....

आशुतोष कुमार आनंद
प्रबंधक(कार्मिक–नीति), ऋषिकेश

हास-परिहास

» बहस से बुरी तरह खिसियाकर एक व्यक्ति ने दूसरे से कहा, ''यार तुम तो हर बात पर लाल पीले होने लगते हो'' ! हाँ, मैं पैदा ही होली के दिन हुआ था। दूसरे ने झल्लाकर जवाब दिया।

» दिल्ली में एक गंजा व्यक्ति सड़क पर जा रहा था। उसके पास से एक महिला गुजरी जिसने बहुत ऊँचा जूड़ा बना रखा था। गंजे ने महिला से पूछा, बहन जी, पहाड़गंज किधर है ? महिला थोड़ी जल्दी में थी, बोली– पहाड़ मेरे सिर पर है और गंज तेरे सिर पर।

» एक व्यक्ति मरने के बाद यमराज के पास पहुंचा। यमराज ने उससे कहा कि यहां यह देखकर वाहन उपलब्ध कराया जाता है कि लोग अपने जीवनसाथी के प्रति कितने वफादार थे। तुम जिदंगी भर अपनी पत्नी के प्रति बहुत निष्ठावान रहे हो इसलिए तुम्हें पुष्पक विमान दिया जाता है। कुछ दिनों बाद यमराज ने देखा कि वह आदमी रो रहा है। यमराज ने पूछा तुम्हे पुष्पक विमान दिया गया था, फिर तुम क्यों रो रहे हो। उसने जवाब दिया ''मैंने अभी अपनी बीवी को रिक्शा चलाते देखा है।''

» एक बिल्ली ने चूहे से कहा, ''इधर आओ मैं तुम्हें खुशहाल बना दूँगी। तुम्हारा घर मक्खन और रोटी से भर दूँगी।'' चूहे ने दूर से ही प्रणाम करते हुए कहा, ''मैं जानता हूँ कि तुम राजनीति की बातें कर रही हो।''

» चिड़ियाघर के एक कोने में बैठा चिड़ियाघर का एक आदमी फफक–फफक कर रो रहा था। चिड़ियाघर देखने आए व्यक्ति ने चिड़ियाघर के एक दूसरे कर्मचारी से पूछा– यह क्यों रो रहा है? कर्मचारी– चिड़ियाघर का हाथी मर गया है। व्यक्ति– ओह, इसे उस हाथी से बहुत लगाव था क्या? कर्मचारी– नहीं, हाथी को दफनाने के लिए गड्ढा खोदने का काम इसे मिला है।

» एक दंपत्ति नाटक देखने गया। पान की दुकान से पति ने पान का एक ही बीड़ा खरीदा और अपनी पत्नी को दे दिया। अपने लिए भी तो ले लीजिए। पत्नी ने बीड़े को मुँह में रखते हुए कहा। नहीं, उसकी कोई जरूरत नहीं। मैं मुँह में कुछ रखे बिना भी खामोश रह सकता हूँ।

» दो दोस्तों का वार्तालाप – पहला– सुना है तुम दोनो का संबंध अटूट है। दूसरा– हाँ भई, जब हमारा झगड़ा होता है तब पाँच सात आदमी मिलकर बड़ी मुश्किल से हमें अलग करते हैं।

» बल्लेबाज महोदय अपना प्रेम प्रसंग सुना रहे थे– वह तेज गेंद की तरह मेरे जीवन में आई और मुझसे लगभग टकराती हुई निकल गई। मेरा दुर्भाग्य कि मैं उसे रोक नहीं पाया। आजकल कहाँ है वह? मित्र ने पूछा। यहीं है, हमारे विकेटकीपर की पत्नी है। जवाब मिला।

» भाई, कालिदास मेघ को दूत बनाकर संदेश क्यों भेजता था ? उसके पास मोबाइल नहीं था न।

» अरी, मोटर ड्राइविंग के तुम्हारे टेस्ट का क्या हुआ? क्या तुम्हें लाइसेंस मिल गया ? एक पड़ोसन ने दूसरी पड़ोसन से पूछा। अभी कहाँ, अभी तो मेरा इंस्ट्रक्टर ही अस्पताल में है। दूसरी ने अत्यंत भोलेपन से उत्तर दिया।

» दो महिलाएं एक पेड़ के नीचे बहुत देर से बात कर रही थीं। अचानक एक पका हुआ आम उनकी गोद में गिरा। पहली ने आश्चर्य से पूछा– अरे, इस मौसम में यह पका आम कहाँ से आ टपका ? आम बोला – आप दोनों की बातें सुन–सुन कर पक गया।

» एक बार एक फिल्म के प्रोड्यूसर ने भगवान की तपस्या शुरु की। भगवान एकदम से प्रकट हो गए। प्रोड्यूसर चिढ़ के बोला, मैंने तो सुना था कि तपस्या करने बैठो तो पहले तपस्या भंग करने के लिए अप्सराएँ आती हैं!

साफ और सम्मानित रहने के लिए पैसे की आवश्यकता नहीं है – **महात्मा गांधी**

साहित्यकार परिचय

डॉ. रामविलास शर्मा

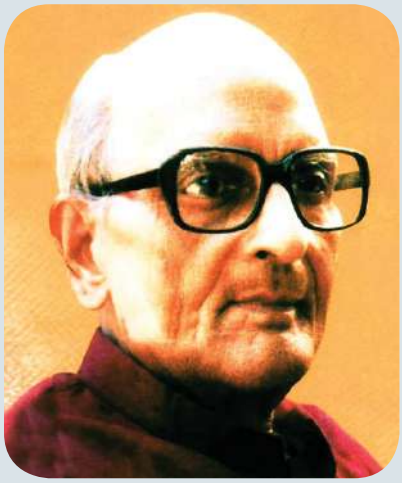

डॉ. रामविलास शर्मा का जन्म 10 अक्टूबर, 1912 ई. में उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में उच्चगांव सानी में हुआ था। वे आधुनिक हिंदी साहित्य में सुप्रसिद्ध' आलोचक, निबंधकार, विचारक एवं कवि थे। राम विलास शर्मा हिंदी में प्रगतिवादी समीक्षा–पद्धति के एक प्रमुख स्तम्भ थे। सन् 1971 ई. में इन्होंने कन्हैयालाल माणिक मुंशी हिंदी विद्यापीठ में अध्यापन प्रारंभ किया। इसके पूर्व आगरा के ही बलवंत राजपूत कॉलेज में शर्मा जी अंग्रेजी के प्राध्यापक रहे। इन्होंने अपने उग्र और उत्तेजनापूर्ण निबंधों से हिंदी समीक्षा को एक गति प्रदान की। इन्होंने सम्पूर्ण साहित्य नए और पुराने को मार्क्सवादी दृष्टिकोण से देखने–परखने का प्रस्ताव बड़ी क्षमता के साथ किया है। शर्मा जी ने सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों समीक्षा पद्धतियों से अपने विचारों को पुष्ट करने का यत्न किया है। समालोचक नामक एक पत्र भी इनका प्रकाशित हुआ। इनकी मृत्यु मई, 2000 ई. में हुई थी। शर्मा जी की समीक्षा कृतियों में विशेष उल्लेखनीय हैः–

- प्रेमचन्द्र और उनका युग (1953)
- निराला (1946 ई.)
- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रगति और परंपरा, भाषा साहित्य और संस्कृति (1954 ई.)
- भाषा और समाज (1961 ई.)
- निराला की साहित्य साधना (1969 ई.)

रामविलास शर्मा ने यद्यपि कविताएं अधिक नहीं लिखी, परन्तु हिंदी के प्रयोगवादी काव्य–आंदोलन के साथ वे घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध रहे हैं। अज्ञेय द्वारा सम्पादित 'तारसप्तक (1943 ई.) के एक कवि रूप में इनकी रचनाएं काफी चर्चित हुई हैं। आप वर्ष 1986–87 में हिंदी अकादमी के प्रथम सर्वोच्च सम्मान शलाका से सम्मानित साहित्यकार हैं।

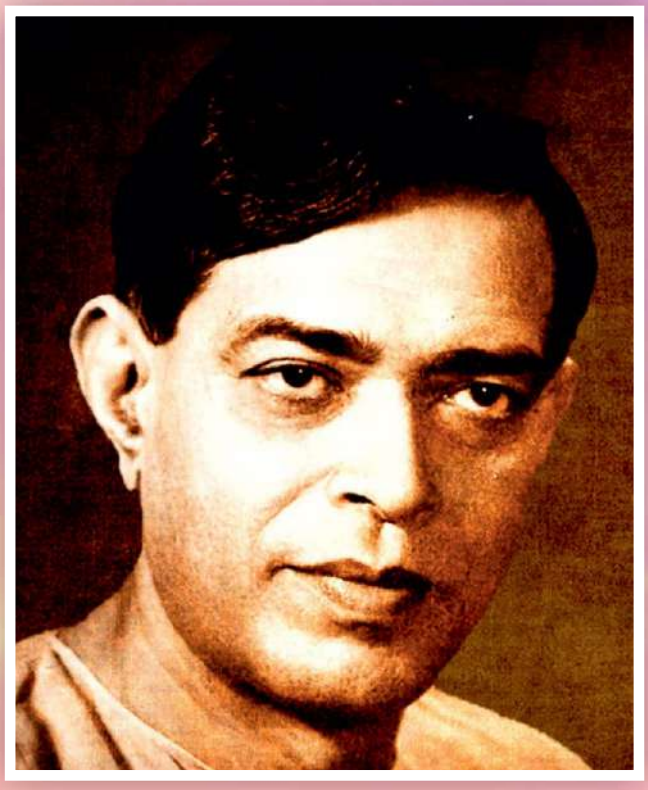

जिस मिट्टी ने लहू पिया,
वह फूल खिलाएगी ही।
अंबर पर बन घन छाएगा,
ही उच्छवास तुम्हारा।
और अधिक ले जांच,
देवता इतना क्रूर नहीं है।
थककर बैठ गए क्या भाई,
मंजिल दूर नहीं है।

रामधारी सिंह दिनकर

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED
(भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार का संयुक्त उपक्रम)

गंगा भवन, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड, ऋषिकेश–249201 (उत्तराखंड)
दूरभाषः 0135–2473614, वेबसाइटः http://www.thdc.co.in
पंकज कुमार शर्मा, वरि. हिंदी अधिकारी द्वारा टीएचडीसीआईएल के लिए प्रकाशित
(निःशुल्क आंतरिक वितरण के लिए)

SHARAD